| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २. ऋषभसभनासुरलतास्तवन | | | | गा. २९ | | | | |
| | ३. महावीरहिण्डींस्तवन | | | | गा. ३७ | | | | |
| | ४. साधारणजिनस्तवन | | | | गा. २७ | | | | |
| | ५. सीमन्धरजिनस्तवन | २१ | गु. | सकलचन्द्र (बधाना) | गा. ३० | | १८मो | उत्तम | १० × ४।। |
| | ६. सीमन्धरजिनस्तवन | | | | गा. १५ | | | | |
| | ७. सीमन्धरजिनस्तवन | | | | गा. ३२ | | | | |
| | ८. साधारणजिनस्तवन | | | | गा. ३६ | | | | |
| | ९. सीमन्धरजिनस्तवन | | | | गा. २९ | | | | |
| १५९५५ | महावीरस्वामीस्तवन | ६ | गु. | हंसराज | गा. ७२ | | १९मो | उत्तम | १० × ४।। |
| १५९५६ | विमलाचलस्तवन | २ | ,, | वाचक उदयविजय | गा. ३६ | | ,, | ,, | १० × ४। |
| १५९५७ | धर्मनाथस्तवन[1] | ४-६ | ,, | विनयविजय | गा. १३७ | १७१६ | ,, | ,, | ९ × ४। |
| १५९५८ | संवेगरसचन्द्रावला | ४ | ,, | लींबो कवि | गा. ५० | | १७६५ | ,, | १०। × ४। |
| १५९५९ | वैराग्यछत्रीसी[2] | २ | ,, | जिनहर्ष | गा. ३६ | १७२७ | | ,, | १० × ४।। |
| १५९६० | उपस्थापनादिविधि अपूर्ण | ३ | ,, | | | | १७मो | ,, | १० × ४।। |
| १५९६१ | साधु अतिचार | ३ | ,, | | | | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९६२ | चोवीसदण्डकगत्यागतिस्वाध्याय | २ | ,, | पार्श्वचन्द्र | गा. २३ | | १९मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९६३ | अष्टादश नातरां सज्झाय | २ | ,, | ऋध्धिविजय | गा. ३५ | | ,, | ,, | १०। × ४।। |
| १५९६४ | वीसविहरमानजिनस्तवनो[3] | १० | ,, | रामविजय | | | ,, | ,, | १० × ३।। |
| १५९६५ | उपधानविधिस्तवन | ६ | ,, | उत्तमचन्द्र | | १७११ | १८३६ | ,, | १०. × ४।। |
| १५९६६ | १. नेमिजिनस्तवन | | | १. रतनसी स्थानकवासी | गा. ३२ | १६७२ | १६९३ | | |
| | २. पञ्चवर्णस्तवन | ३ | ,, | २. ज्ञानमुनि | गा. २४ | १६६९ | | | |
| | ३ चोवीसजिनस्तवन | | | | गा. ३ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| | ४. अजितजिनस्तवन | | | ४. कान्हमुनि | | १६६६ | | | |
| १५९६७ | महावीर २७ भव स्तवनादि | ४ | ,, | शुभविजय | गा. ८६ | | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९६८ | नेमिजिनस्तवन | ३ | ,, | दर्शनविजय | | १६६१ | ,, | ,, | १०।। × ४।। |
| १५९६९ | ईश्वरसंख्या | २ | ,, | ईसर | गा. २९ | | १७मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १५९७० | कल्याणकस्तवन | ४ | ,, | | गा. ४९ | | ,, | ,, | ११। × ४।। |

१. प्रति उंदरे करडेली छे. २. कर्ताए स्वयं लखेली. ३. प्रति एक बाजुथी उंदरे करडेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५९७१ | बोलविचार | ५ | गु |  |  |  | १७मो | उत्तम | १०। × ४।। |
| १५९७२ | जीरावलापार्श्वनाथस्तवन | २ | ,, | सुधानन्द | गा. ४४ |  | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९७३ | अन्तरीक्षपार्श्वनाथछन्द | ३ | ,, | वाचक भावविजय | गा. ५१ |  | १९मो | ,, | १०।। × ४।।। |
| १५९७४ | चम्पकमालारास | ३ | ,, |  | गा. ९३ |  | १६३३ | ,, | १०।। × ४।। |
| १५९७५ | चिन्तामणिपार्श्वनाथविनति | २ | ,, | गुणसागर | गा. १४ |  | १९मो | ,, | १०। × ४।।। |
| १५९७६ | आर्द्रकुमारचतुष्पदी | १३ | ,, | ज्ञानसागर | गा.३०१ ग्रं.४५१ | १७२७ | १७६६ | ,, | १० × ४।।। |
| १५९७७ | सत्तरीसयठाणयन्त्र | ११ | ,, |  |  |  | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९७८ | किरातार्जुनीयवृत्तिगतश्लोक व्याख्या अपूर्ण | ३ | सं. |  |  |  | १९मो | ,, | १० × ४।। |
| १५९७९ | साधुवन्दना | २० | गु. | आनन्दविजय |  | १६४२ | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९८० | लुम्पकहुण्डी अपूर्ण | १८ | ,, |  |  |  | १७मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १५९८१ | धनदत्तचतुष्पदी-व्यवहारशुद्धिविषये | ८ | ,, | समयसुन्दर | २१८ | १६९६ | १९मो | ,, | १०। × ४।।। |
| १५९८२ | चारित्रमनोरथमाला | ३ | ,, | क्षेमराज | गा. ५३ |  | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९८३ | द्वादशभावना | ८ | ,, | सकलचन्द्र |  |  | १९मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९८४ | केशी-प्रदेशीप्रबन्ध | २ | ,, | पार्श्वचन्द्र | गा. २५ |  | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९८५ | १. मेघकुमारस्वाध्याय<br>२. स्थूलभद्रस्वाध्याय | २ | गु. | १. भावप्रभसूरि<br>२. भावप्रभसूरि | गा. ११<br>गा. ९ |  | १९मो | उत्तम | १०। × ४।। |
| १५९८६ | आनन्दसागरस्तवनचोवीसी | ५ | ,, | आनन्दसागर |  |  | ,, | ,, | ९।।। × ४। |
| १५९८७ | शंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवन | ३ | ,, | वृद्धिविजय |  | १७३० | १७३० | ,, | १०। × ४।।। |
| १५९८८ | रत्नसारकुमारचतुष्पदी | १२ | ,, | वाचक सहजसुन्दर | गा. ३०७ | १५८२ | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९८९ | औषधि | २ | ,, |  |  |  | १८मो | ,, | १० × ४।। |
| १५९९० | अन्तरीक्षपार्श्वनाथछन्द | ५ | ,, | वाचक भावविजय | गा. ५१ |  | १७८३ | ,, | १०। × ४।। |
| १५९९१ | चन्द्रलेखाचतुष्पदी-सामायिकविषये | ५ | ,, | हर्षमूर्ति | गा. १७४ | १५६६ | १८मो | ,, | ९। × ४। |
| १५९९२ | नेमीश्वरचरित्रफाग | २ | ,, |  | गा. ९१ |  | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १५९९३ | नवकारमहिमास्वाध्याय | ५ | ,, | ज्ञानविमल |  |  | १९मो | ,, | १० × ४।।। |
| १५९९४ | देवचन्द्रजीस्तवनचोवीसी | १३ | ,, | देवचन्द्रजी |  |  | १८१४ | ,, | १०। × ४।।। |
| १५९९५ | वासुपूज्यजिनधवल | १० | ,, |  | गा.१२९,<br>ग्रं. ३०६ |  | १६६६ | ,, | ९।।। × ४।। |
| १५९९६ | गौतमपृच्छाचतुष्पदी | ३ | ,, | लावण्यसमय |  | १५४५ | १७मो | ,, | १० × ४।। |

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५९९७ | कल्याणकतपगणणु | ३ | गु | | | | १८मो | उत्तम | ९॥ × ४॥ |
| १५९९८ | १. दशार्णभद्रस्वाध्याय | | | १. लालविजय | गा. १८ | | १९मो | ,, | १०। × ४॥। |
| | २. शीतलजिनस्तवन | २ | ,, | २. गुणहंस | गा. ६ | | | | |
| १५९९९ | पिण्डनिर्युक्ति | १७ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामि | गा. ७१६ | | १६मो | ,, | १० × ४॥ |
| १६००० | १. दीपालिकाकल्प | १० | सं. | १. जिनसुन्दर | ६०० | १४२३ | १७३६ | ,, | ९॥। × ४॥ |
| | २. ज्ञानपञ्चमीकथा | | | २. कनककुशल | | १६५५ | | | |
| १६००१ | नवतत्त्वप्रकरण | २ | प्रा. | | गा. ४१ | | १८मो | मध्यम | १०। × ४। |
| १६००२ | षड्दर्शनसमुच्चय सावचूरि पञ्चपाठ | ५ | सं. | मू. हरिभद्रसूरि | | | १७मो | उत्तम | ९॥ × ३॥ |
| १६००३ | षडावश्यकसूत्र सावचूरि पञ्चपाठ | १८ | प्रा.सं. | अव. तिलकाचार्य | १,२०० | | १६मो | ,, | १० × ४। |
| १६००४ | चैत्यवन्दनादिआवश्यकसूत्र सावचूरि | ५ | सं. | | | | १७१८ | मध्यम | ९॥। × ४। |
| १६००५ | नन्दिसूत्र लघु | १ | प्रा. | | | | १६४७ | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६००६ | नन्दिसूत्र लघु | २ | ,, | | | | १६६० | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६००७ | समुद्रनौकारास | ९ | गु. | उपा. यशोविजयजी | गा. ३१० | १७१७ | १७६१ | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६००८ | आसकपचीसी | २ | ,, | जिनचन्द्र यति | गा. २५ | | १९मो | ,, | १०॥ × ५ |
| १६००९ | मौनएकादशीकथा बालावबोध | ४ | ,, | | | | १८मो | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६०१० | शिवदत्तरास-प्रापतियानो रास | ८ | ,, | सिद्धसूरि | २८५ | १५३८ | १६६७ | ,, | १० × ४॥ |
| १६०११ | महावीरस्वामीस्तवन | ४ | ,, | वीरविजय | | १७०८ | १९मो | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६०१२ | विजयसिंहसूरिनिर्वाण | १ (त्रीजुं) | गु. | वीरविजय | गा. ५२ | १७७८ | १९मो | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६०१३ | धनाचतुष्पदी-सुपात्रदाने | ११० | ,, | मतिशेखर | गा. २२४ | १५१४ | १६६७ | ,, | १० × ४॥ |
| १६०१४ | आत्मराजरास | ५ | ,, | सहजसुन्दर | गा. ८० | १५८८ | १७मो | ,, | १० × ४। |
| १६०१५ | रोहिणीचतुष्पदी | ५ | ,, | नाथो कवि | गा.१२५ | | १८मो | ,, | ९॥ × ४॥ |
| १६०१६ | दशश्रावकपरिग्रहप्रमाणस्वाध्याय | २ | ,, | कोरंटगच्छीय नन्नसूरि | गा.३१ | | १७मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६०१७ | १. नवतत्त्वप्रकरण | ६ | प्रा | | गा.५४ | | १९मो | ,, | १० × ४। |
| | २. जीवविचारप्रकरण | | | २. शान्तिसूरि | ५१गा. | | | | |
| १६०१८ | चैत्यवन्दनविधि | ९ | प्रा.गु. | | | | १७मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६०१९ | साधुवन्दना | १९ | गु. | | २६६ | | १५८५ | ,, | १०। × ४॥ |

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६०२० | महावीरस्तवन स्वोपज्ञस्तबकसहित[1] | १६ | गु | उपा. यशोविजयजी | ५७१ | १७३३ | १७४३ | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६०२१ | चिहुंगतिवेलि | ७ | ,, | | गा.१३५ | | १८मो | ,, | १० × ४।। |
| १६०२२ | अष्टदृष्टिस्वाध्याय | ६ | ,, | उपा. यशोविजयजी | गा.७४ | | १९मो | ,, | १० × ४।। |
| १६०२३ | चातुर्मासिक देववन्दनविधि | ५ | ,, | राजरत्नोपाध्याय | | | १७८५ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६०२४ | धनदत्तचोपाई-व्यवहारशुद्धिविषये[2] | ९ | ,, | समयसुन्दर | गा.१६१, ग्रं.२१८ | १६९६ | १८मो | ,, | १० × ४।। |
| १६०२५ | शंखेश्वरपार्श्वनाथस्तवन | ७ | ,, | उदयविजयगणि | गा.१३५ | | १७६५ | ,, | १०। × ४।।। |
| १६०२६ | वत्सराजरास | १३ | ,, | लावण्यसमय | गा.४३० | | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६०२७ | साधुवन्दना | ९ | ,, | | गा.२४८ | | ,, | ,, | १०। × ४।। |
| १६०२८ | १. विवेकमञ्जरीप्रकरण | ८ | प्रा. | १. आसड | गा.१४५ | १२४८ | १५२३ | ,, | १०। × ४।। |
| | २. पञ्चपरमेष्ठिस्तवन | | | | गा.८ | | | | |
| १६०२९ | नेमिजिनगीतादिगीतसङ्ग्रह | २ | गु. | सकलचन्द्र, मेघो, हरजी आदि | | | १६४६ | ,, | १०। × ४।। |
| १६०३० | श्रावकातिचार | ३ | ,, | | | | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६०३१ | देशभङ्गादिविचार[3] | २ | | | | | १९मो | ,, | १० × ४।। |
| १६०३२ | जिनस्तवनसङ्ग्रह | ३ | गु. | ज्ञानविमलसूरि | | | ,, | मध्यम | ९।।। × ४।। |
| १६०३३ | अमरसेन-वयरसेनकथा गद्य-दानपूजाधिकारे | १२ | सं. | | | | १६६९ | जीर्णप्राय | १०। × ४।। |
| १६०३४ | अष्टापदतीर्थस्तवन | ४ | गु. | समरो | गा.५६ | | १८मो | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६०३५ | नेमिनाथरास | ४ | ,, | न्यानरतन (ज्ञानरत्न) | गा. ६३ | | १५९६ | ,, | १०। × ४।। |
| १६०३६ | पल्लीविचार | ३ | ,, | | | | १८मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६०३७ | शान्तिजिनस्तवन | ३ | ,, | नयविमल | गा. ८१, ग्रं.१३५ | १७३७ | १७५७ | ,, | ९।। × ४। |
| १६०३८ | योगपावडी | ५ | ,, | गोरखनाथ | गा.६७ | | १७३५ | ,, | ९।।। × ४। |
| १६०३९ | षडावश्यकसूत्र सस्तबक[4] | १६ | प्रा.स. | | ३५० | | १८मो | जीर्ण | १०। × ३।। |
| १६०४० | ज्योतिषसारसङ्ग्रह | ६ | सं. | | १३२ | | १६मो | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६०४१ | १. दशदृष्टान्तस्वाध्याय | | | १. वीरविजय | गा.२१ | | | | |
| | २. आदिनाथस्तवन | २ | गु. | | गा.५ | | १९मो | मध्यम | १०। × ४। |
| | ३. नेमिनाथस्तवन | | | ३. जिनविजय | गा.५ | | | | |
| १६०४२ | उत्तराध्ययनसूत्रभास | १५ | गु. | ब्रह्म कवि | | | १६५२ | उत्तम | १०। × ४।। |

१. पत्र १२ थी १४ नथी. २. समसुन्दरगणिना प्रशिष्य हर्षकुशले शोधेली प्रति. ३. ऐतिहासिक ४. लाल अने काली शाहीथी लखेली प्रति.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६०४३ | सत्तरिसयजिनस्तवन | ३ | गु. | विशालसुन्दरशिष्य | गा.६५ | | १८मो | उत्तम | १०।। x ४।। |
| १६०४४ | १. साधुवन्दना<br>२. कर्मछत्रीसी<br>३. फाग | ६ | ,, | बनारसीदास (बधाना) | गा.३२<br>गा.३७<br>गा.१७ | | ,, | उत्तम | १०।।। x ४।। |
| १६०४५ | द्वादशभावना | ८ | ,, | सकलचन्द्र | | | १७७० | ,, | १०।। x ४।। |
| १६०४६ | महावीरसम्यक्त्वप्राप्तिअधिकार आवश्यकनिर्युक्तिगत | १२ | प्रा.गु. | | | | १६मो | | १०।। x ४।। |
| १६०४७ | इलदुर्गमण्डनादिजिनप्रासादचैत्यपरिपाटी[१] | ५ | गु. | जिनमाणिक्यशिष्य अनन्तहंस | | | ,, | ,, | १०।। x ४।। |
| १६०४८ | १. नेमिनाथस्तवन<br>२. गौतमस्वामिस्वाध्याय<br>३. विजयसेनसूरिस्वाध्याय आदि[२] | १० | ,, | हेमविजय, कमलविजय | | | १८मो | | १०। x ४।। |
| १६०४९ | अवन्तीसुकुमालनां तेर ढाळियां | ६ | ,, | जिनहर्ष | | १७४१ | १७७८ | ,, | १०।।। x ४।।। |
| १६०५० | उत्तमकुमारचरित्ररास | १६ | ,, | जिनहर्ष | गा.५८७,<br>ग्रं.८०१ | १७४५ | १७६१ | ,, | १०।। x ४।। |
| १६०५१ | साधुवन्दनास्वाध्याय | ११ | ,, | कुशलवर्धनशिष्य | गा.२४७,<br>ग्रं.३०० | १६९९ | १८मो | ,, | १०।। x ४।। |
| १६०५२ | एकादशाङ्गस्वाध्याय | ६ | ,, | उपा. यशोविजयजी | | १७४४ | १७८२ | ,, | १०। x ४।। |
| १६०५३ | जिनस्तवन चोवीसी | ७ | ,, | उपा. यशोविजयजी | | | १८१४ | ,, | १०।। ५ |
| १६०५४ | कपूरविजयनिर्वाणभास | ६ | ,, | जिनविजयगणि | | १७७९ | १९मो | ,, | १०। x ४।।। |
| १६०५५ | विजयसिंहसूरिनिर्वाण | ३ | ,, | वीरविजय | गा. ५३ | १७०९ | १८मो | ,, | १०। x ४।। |
| १६०५६ | १. राणकपुरस्तवन<br>२. महावीर २७ भव स्तवन<br>३. जीराउलापार्श्वनाथस्तवन<br>४. शंखेश्वरपार्श्वनाथस्तवन<br>५. पार्श्वनाथस्तवन | ६ | | १. मेहो<br>२. सोमसुन्दरशिष्य<br>३. लावण्यसमय<br>४. हंसभुवन | गा. ४७<br>गा.३१<br>गा. २८<br>गा. ४६<br>गा. ८ | १४९९<br><br><br>१६७८ | १६७४ | ,, | १०। x ४।। |
| १६०५७ | आदि-अनादिविचारयंत्र-भगवतीशतक ८, उद्देश२ | ४ | ,, | | | | १९मो | ,, | १०। x ४।। |
| १६०५८ | १. शंखेश्वरपार्श्वनाथस्तवन<br>२. बंभणवाड महावीरस्तवन | | | १. विद्याचन्द्र<br>२. कमलकलशसूरिशिष्य | गा. २५<br>गा. २१ | १६६० | १७५४ | | |

१. प्रति चित्रपुष्पिका-चित्रवर्णिका सह छे. अनन्तहंस प्राकृत कूर्मपुत्रचरित्रना कर्ता छे. २. पत्र २जुं नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ३. नेमिनाथस्तवन | १२ | गु | ३. ऋषभदास | गा ६६ | १६६२ | | उत्तम | १० × ४।। |
| | ४. नेमिनाथ बारमासा | | | ४. हर्षविजय | गा २७ | १७२८ | | | |
| | ५. महावीरस्तवन | | | ५. लक्ष्मण | गा १०० | १५२१ | | | |
| १६०५९ | मौन एकादशी देववन्दनविधि | ६ | गु | दानविजय | | | १७८२ | उत्तम | १० × ४।। |
| १६०६० | साधुदिनचर्यास्वाध्याय | २ | ,, | आनन्दवर्धनसूरि | गा.३२ | | १८मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६०६१ | जिनस्तवन चोवीसी | ६ | गु | ज्ञानविमलसूरि | | | १९मो | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६०६२ | नमिराजर्षिचतुष्पदी | ४ | ,, | न्यानोदक (ज्ञानसागर) | गा. ६२ | | १७मो | ,, | १०।।। × ४। |
| १६०६३ | योगविधि अपूर्ण | ७ | ,, | | | | १९मो | ,, | १०।।। × ४।।। |
| १६०६४ | १. दण्डकस्तवन | | | १. धर्मसिंह | गा. ३४ | १७२९ | | | |
| | २. गुणठाणाविचारस्तवन | ३ | ,, | २. धर्मसिंह | गा. ३३ | १७२८ | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| | ३. अष्टभंगीस्वाध्याय | | | ३. उदयविजय | गा.१३ | | | | |
| १६०६५ | गौतमपृच्छारास | ८ | ,, | लावण्यसमय | ११५ | | १९मो | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६०६६ | तीर्थमाला | ४ | ,, | धनहर्ष | गा.६४ | | १८मो | ,, | १०। × ४।।। |
| १६०६७ | चतुर्विंशतिजिनगीत | ४ | ,, | आनन्दमुनि | | | ,, | ,, | १० × ४।। |
| १६०६८ | सम्यक्त्वव्रतादिउच्चारणविधि | ४ | ,, | | | | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६०६९ | चम्पकसेनरास | ११ | ,, | मतिसागर | गा.३८९ | १६०५ | १६४९ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६०७० | सत्तरिसयस्थानयंत्र | १० | ,, | | | | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६०७१ | ज्ञानपंचमीकथा बालावबोध[1] | ७ | ,, | | | | १८२८ | ,, | १०। × ४।। |
| १६०७२ | जिनस्तवनचोवीसी | ९ | ,, | माणिक्यविजय | | | १७८८ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६०७३ | १. सोमसुन्दरसूरिस्वाध्याय | २ | ,, | | गा.९ | | १५३६ | | |
| | २. चिहुंगति चतुष्पदी | | | | गा.१८ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६०७४ | उपधानविधिस्तवन[2] | ४ | ,, | विनयविजय | गा.२७ | १८०५ | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६०७५ | १. सिद्धान्तचतुष्पदी-लुंकटवदनचपेटा | ७ | ,, | १. लावण्यसमय | गा.१४१ | १५४३ | | | |
| | २. गीत | | | | गा ४ | १५४३ | १६मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६०७६ | १. चतुर्विंशतिजिननमस्कार | | | १. ऋषभकवि | गा.७२ | | | | |
| | २. शालिभद्रसज्झाय | ४ | ,, | २. सहजसुन्दर | गा. १७ | | १९मो | ,, | १०। × ४।।। |
| १६०७७ | अनाथीसन्धि | ८ | ,, | विमलविनय | | १६४७ | १८मो | ,, | १०।। × ४।।। |

१-२. एक खूणेथी उंदरे करडेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनास. | लेखनस. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६०७८ | आषाढभूतिस्वाध्याय | ५ | गु | स्थूलिवर्धन (?) | गा ५५ | | १८मो | उत्तम | १० × ४॥ |
| १६०७९ | सप्ततिकाभाष्य | ८ | प्रा | अभयदेवसूरि | गा १९१ | | १७९८ | ,, | १०। × ४॥। |
| १६०८० | अंगस्फुरणविचार | १ | ,, | | | | १६मो | ,, | १० × ४। |
| १६०८१ | आलोचनाविचार | ८ | ,, | | | | १९मो | ,, | १०॥ × ५ |
| १६०८२ | गौतमपृच्छा बालावबोध सहित | ६ | गु | | | | १६मो | मध्यम | १०॥ × ४॥ |
| १६०८३ | दशवैकालिकसूत्र स्वाध्याय | १० | ,, | वृद्धिविजय | १८४ | | १७८१ | उत्तम | १०। × ४॥। |
| १६०८४ | जिनस्तवनचोवीस | ९ | ,, | रामविजय | | | १७७७ | ,, | १०॥। × ४॥ |
| १६०८५ | वर्धमानजिनस्तवन[1] | ३ | ,, | सकलचन्द्र | गा. ३२ | | १९मो | मध्यम | १०॥। × ५ |
| १६०८६ | पार्श्वनाथगुणवेलि | ३ | ,, | जिनमेरु | गा. ४४ | १६८९ | १६९० | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| १६०८७ | योगविधि | ३ | ,, | | | | १८मो | ,, | १०॥। × ४॥ |
| १६०८८ | आत्मस्वभावस्वाध्याय | २ | ,, | सकलचन्द्र | गा. २० | | ,, | ,, | १०। × ४॥। |
| १६०८९ | विष्णुभक्ति | २ | ,, | मीठो श्रावक | गा ५१ | १५८७ | १७मो | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६०९० | शकुनावलि | ६ | ,, | | | | १९मो | ,, | १०। × ४॥। |
| १६०९१ | अष्टमीस्तवन | ६ | ,, | कान्तिविजय | गा २४ | | ,, | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६०९२ | अवन्तीसुकुमालस्वाध्याय | ७ | ,, | जिनहर्ष | गा १०५ | १७४१ | ,, | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६०९३ | आलोचनाविधि | ८ | ,, | | | | ,, | ,, | १०। × ४॥। |
| १६०९४ | शंखेश्वर पार्श्वनाथराजगीता | ४ | ,, | उदयविजय वाचक | गा ३६ | | ,, | ,, | १०। × ४॥। |
| १६०९५ | महावीरजिन १२५ गाथानुं स्तवन | १० | ,, | उपा यशोविजयजी | गा. १२५ | १७३३ | ,, | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६०९६ | पर्यन्ताराधनाप्रकरण बालावबोध सह | ७ | प्रा गु | मू सोमसूरि | | | १६७१ | जीर्ण | १०। × ४॥ |
| १६०९७ | जम्बूस्वामी ब्रह्मगीता स्वाध्याय | ३ | गु | उपा यशोविजयजी | गा २८ | १७३८ | १७७३ | उत्तम | १०॥ × ४॥। |
| १६०९८ | मातृकाबावनी | ६ | ,, | जिनहर्ष | गा. ५७ | १७३८ | १९मो | ,, | ९॥। × ५। |
| १६०९९ | पुण्यप्रकाशस्तवनादि | ८ | ,, | उपा विनयविजयजी | | १७२९ | १८मो | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६०१०० | उपधानविधिस्तवन | ५ | ,, | उत्तमचन्द्र | | १७११ | १८०१ | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६०१०१ | स्थविरावली-नन्दिसूत्रगत | २ | प्रा. | देववाचक | गा ५० | | १८मो | ,, | १० × ४॥ |
| १६०१०२ | दोढसो कल्याणकगणणुं | २ | गु | | | | ,, | ,, | १० × ४॥ |
| १६०१०३ | १. बाणुं जिन स्तवन } | | | | गा ३१ | | | | |
| | २. चोवीस दण्डकभास } | | | | गा. १६ | | | | |

१. प्रति उदरे करडेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ३. शीलभास | ५ | गु. | रूपऋषि(बधाना) | गा.१५ | | १७मो | उत्तम | १०। × ४।। |
| | ४. तेर काठिया भास | | | | गा.१६ | | | | |
| | ५. साधारणजिनस्तवन | | | | गा. ६ | | | | |
| १६१०४ | दशार्णभद्र स्वाध्याय | २ | ,, | लालविजय | गा.९ | | १९मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१०५ | चौद स्वप्न स्तवन | २ | ,, | लावण्यसमय | गा.२६ | | १७मो | ,, | १०। × ४। |
| १६१०६ | साधुअतिचार | ३ | ,, | | | | ,, | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६१०७ | दीपालिका देववन्दन | ४ | ,, | ज्ञानविमलसूरि | | | १९मो | ,, | १०। × ४।।। |
| १६१०८ | १. जम्बूस्वामीवेली | | | | | | | | |
| | २. रथनेमिवेली | | | | | | | | |
| | ३. नेमिनाथ फाग | | | | | | | | |
| | ४. नवकारगीत | ११ | गु. | सोमसुन्दरशिष्य, देपाल, जिनदास, करमशी आदि | | | | | |
| | ५. वैराग्यकुलक | | | | | | | | |
| | ६. शत्रुंजयभास | | | | | | | | |
| | ७. नवपल्लवगीत आदि गीतसंग्रह[१] | | | | | | १५३५ | उत्तम | १० × ४।। |
| १६१०९ | कल्याणकस्तवन[२] | ३ | ,, | दानविजय | | १७६२ | १७९२ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६११० | चोत्रीस अतिशय स्तवन | ३ | ,, | कमलसागर | गा. ३५ | १६०६ | १८मो | ,, | १० × ४। |
| १६१११ | १. अढार नातरा स्वाध्याय | | | १. नारायणमुनि | गा. ३८ | | १७५२ | | |
| | २. सप्तव्यसन स्वाध्याय | २ | ,, | २. आनन्दविजय | गा. ११ | | | जीर्ण | १०। × ४।। |
| १६११२ | नेमिजिनगीत | २ | ,, | लावण्यसमय | गा. १९ | | १५८७ | उत्तम | १०। × ४। |
| १६११३ | तीर्थमाला स्तवन | ३ | ,, | मेहो | गा. ९२ | | १८मो | उत्तम | १०।। × ४।।। |
| १६११४ | साधुवन्दना | ८ | ,, | जसविजयगणि | गा. १०१ | १७२१ | १७६६ | ,, | १०। × ४।। |
| १६११५ | सरस्वतीछन्द | ३ | ,, | | गा. ४४ | १६७८ | १९मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६११६ | १. प्रथम आश्रवद्वार कुलक | ३ | ,, | विनयदेवसूरि | गा. ९२ | | | | |
| | २. बाणूंजिननामस्तवन | | | विनयदेवसूरि | गा. ३१ | | १८मो | ,, | १०।। × ४। |
| १६११७ | आलोचनाविधि | २ | ,, | | | | ,, | ,, | १०। × ४।। |
| १६११८ | सिद्धदण्डिकाप्रकरण सस्तबक | १ | प्रा.गु. | मू. देवेन्द्रसूरि | | | ,, | ,, | १०।। × ४।। |
| १६११९ | पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण सावचूरिपंचपाठ | ४ | प्रा.सं. | मू. अभयदेवसूरि | मू.गा.१०५ | | १५३३ | ,, | १०।। × ४।। |

१. पत्र ९ नथी. २. प्रति उंदरे करडेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६१२० | सम्यक्त्वस्वरूपस्तव | १ | गु. | | गा. २५ | | १७३५ | उत्तम | १० × ४॥ |
| १६०२१ | उत्तराध्ययनसूत्र चतुर्थाध्ययन | १ | प्रा. | | का १३ | | १७३८ | ,, | १० × ४॥ |
| १६१२२ | लघुशान्तिस्तव | १ | सं. | मानदेवसूरि | आ. १८ | | १८मो | ,, | ९॥। × ४। |
| १६१२३ | भरतेश्वरस्वाध्याय | १ | प्रा. | | गा. १३ | | ,, | ,, | ९॥ × ४। |
| १६१२४ | मलयसुन्दरी-महाबल कथा गद्य | १९ | सं. | माणिक्यसुन्दरसूरि | | | १७५४ | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६१२५ | ज्ञाताधर्मकथांगसार | ६ | गु. | | | | १७मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१२६ | चतुर्विंशतिजिननमस्कार | २ | ,, | लक्ष्मण | गा. २५ | | १६६६ | मध्यम | १०। × ४॥ |
| १६१२७ | पौषधविधिगीत | ३ | ,, | समयसुन्दर | गा. ३८ | १६६७ | १७मो | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६१२८ | १. गजसुकुमालस्वाध्याय | ,, | | १. समयसुन्दर | गा. ५ | | | | |
| | २. ज्ञानपचीसी | ,, | | २. बनारसीदास | २५ | | | | |
| | ३. श्रावकविधिसज्झाय | ३ थी ९ | ,, | ३. लावण्यसमय | गा. २० | | १८मो | ,, | १० × ४॥ |
| | ४. घंघाणी तीर्थस्तवन | ,, | | ४. कनकविजय | गा. ९ | | | | |
| | ५. लघुआउरपच्चक्खाण[1] | | प्रा. | | गा. ३५ | | | | |
| १६१२९ | पाक्षिक खामणा | १ | प्रा. | | | | १७मो | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| १६१३० | जयतिहुयण स्तोत्र | १ | अम. | अभयदेवसूरि | का. ३० | | १६मो | जीर्ण | १०॥ × ४। |
| १६१३१ | सुभाषित | ५ | सं. | | १७६ | | १७मो | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| १६१३२ | प्रास्ताविकश्लोक | २ | ,, | | | | ,, | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१३३ | बेंतालीस दोष सस्तबक | ३ | प्रा.गु. | | | | १७४१ | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१३४ | काली-नागदमनी संवाद | ५ | गु. | | गा.२०५ | | १८मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१३५ | पर्यन्ताराधनाप्रकरण | ५ | प्रा. | सोमसूरि | गा. ७० | | ,, | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१३६ | गुरुवन्दनभाष्यस्तवन | ३ | प्रा.गु. | मू. देवेन्द्रसूरि | | | १६मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१३७ | सीमन्धरस्वामीस्तवन | १ | अप. | | गा. २१ | | ,, | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६१३८ | काव्यप्रकाशमूल | २ | सं. | मम्मट | | | ,, | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१३९ | ज्ञानपंचमीकथा पद्य | ५ | ,, | कनककुशल | गा. १५१ | १६५५ | १८ मो | ,, | ९॥। × ४॥ |
| १६१४० | १. श्रावकदिनकृत्यकुलक | | | | | | | | |
| | २. मन्नह जिणाणं सज्झाय | १ | प्रा.गु. | | गा.५. | | १६मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१४१ | बृहच्छान्तिस्तोत्र | २ | सं. | | | | १९मो | ,, | १०। × ४॥। |

१. संपूर्ण.

| क्रमाक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६१४२ | बृहच्छान्तिस्तोत्र | १ | सं. | | | | १८मो | जीर्ण | १०। × ४॥ |
| १६१४३ | लघुशान्तिस्तोत्र | १ | ,, | मानदेवसूरि | गा. १७ | | १७मो | उत्तम | १० × ४॥ |
| १६१४४ | १. सप्तनयस्वरूप<br>२. अष्टमहासिद्धिस्वरूप | १ | गु | | | | १८मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१४५ | वीरस्तुति-दण्डकछन्दोबद्ध | १ | सं | | | | १७मो | मध्यम | ९॥। × ४॥ |
| १६१४६ | अल्पबहुत्वप्रकरणादि | १ | प्रा. | | | | १८मो | उत्तम | १०। × ४॥। |
| १६१४७ | पुण्यकुलक सस्तबक | १ | प्रा.गु | | | | १७मो | ,, | ९॥। × ४॥ |
| १६१४८ | भगवतीगत आलापक | १ | प्रा. | | | | ,, | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१४९ | महावीरजिनस्तवन-स्तुति | १ | सं | | | | १८मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१५० | महावीरजिनस्तवादि | १ | प्रा | | | | १९मो | ,, | १० × ४॥। |
| १६१५१ | महाबल-मलयसुन्दरीकथा गद्य | १७ | सं. | माणिक्यसुन्दर | | | १७मो | मध्यम | १० × ४॥ |
| १६१५२ | योगशास्त्र प्रकाश १-४ | १५<br>(१९थी३३) | ,, | हेमचन्द्राचार्य | | | १६मो | उत्तम | १०। × ४। |
| १६१५३ | द्वादशभावना सस्तबक | १ | प्रा.गु | मू. हेमचन्द्राचार्य | | | १८मो | ,, | १०। × ४। |
| १६१५४ | पद्मावतीस्तोत्र | ३ | सं | | का २७ | | १७५० | ,, | १० × ४॥ |
| १६१५५ | काकरुत | ४ | ,, | | १२० | | १६२३ | जीर्ण | १०। × ४॥ |
| १६१५६ | शीलोपदेशमालाप्रकरण | २ | प्रा. | जयकीर्तिसूरि | गा ११५ | | १५मो | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६१५७ | विद्याविलासरास | ६ | गु. | हीरानन्दसूरि | गा. १८० | १४८५ | १६मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६१५८ | सिद्धचक्ररास | ९ | ,, | ज्ञानसागरोपाध्याय | गा. २६८ | १५३१ | १५७५ | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६१५९ | हितशिक्षारास[1] | १०१ | गु. | ऋषभदास | | | १७६८ | उत्तम | १०॥ × ४॥। |
| १६१६० | नयचक्र | ४७५ | सं. | मल्लवादी क्षमाश्रमण | १८००० | | १७१४ | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६१६१ | भक्तामरस्तोत्र बालावबोध | १८ | गु. | हर्षविजयगणि | | १८५५ | १८मो | ,, | ९॥। × ४। |
| १६१६२ | योगशास्त्र प्रकाश १-४ | २१ | सं. | हेमचन्द्राचार्य | | | १६४५ | ,, | १० × ४॥। |
| १६१६३ | १. नवतत्त्वप्रकरण बालावबोध सह<br>२. दण्डकप्रकरण बालावबोध सह | २० | प्रा.गु | २. मू. गजसार | | | १८४४ | ,, | १०। × ४॥। |
| १६१६४ | देववन्दनादिभाष्यत्रय सावचूरि त्रिपाठ | २३ | प्रा.सं | मू. देवेन्द्रसूरि, अव० सोमसुन्दरसूरि | ८५० | | १६९२ | ,, | १०। × ४॥। |
| १६१६५ | योगविधि | १७ | गु | | | | १९मो | ,, | १०। × ४॥। |

१. पत्र २८ नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६१६६ | जिनप्रतिमाविचार[१] | १५ | गु | | | | १८मो | उत्तम | १०। × ४।।। |
| १६१६७ | सामुद्रिकशास्त्र सस्तबक | २८ | सं.गु. | | | | १७९१ | ,, | १० × ४।। |
| १६१६८ | सामुद्रिकशास्त्र | ४ | सं. | | | | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६१६९ | षट्पंचाशिका | ३ | ,, | भट्टोत्पल | | | ,, | ,, | १० × ४।। |
| १६१७० | सिद्धहेमशब्दानुशासन प्रथमाध्यायथी द्वितीयाध्याय प्रथम पाद पर्यन्त सस्तबक | ८ | सं.गु. | | | | १६मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१७१ | सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति अवचूरि द्वितीयाध्याय तृतीय पादथी तृतीयाध्याय तृतीय पाद पर्यन्त अपूर्ण | ४ थी २९ | सं. | | | | १५मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६१७२ | मुहूर्त मुक्तावलि | ४ | | परमहंस | ४५ | | १९ मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१७३ | सोमशतक-सिन्दूरप्रकर | ४ | ,, | सोमप्रभाचार्य | १०१ | | १६मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६१७४ | वीतरागस्तव[२] | ८ | ,, | हेमचन्द्राचार्य | | | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६१७५ | पाक्षिकसूत्र सावचूरि पंचपाठ | ११ | प्रा.सं. | | | | ,, | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१७६ | प्रज्ञापना तृतीयपद संग्रहणी अवचूरि | ५ | सं. | | | | १४५३ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१७७ | साधारणजिनस्तवन सटीक[३] | ३ | ,, | टी.कनककुशलगणि | १४२ | | १९मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१७८ | देववन्दनादिभाष्य गद्य अवचूरि पंचपाठ[४] | १० | प्रा. सं. | | | | १६मो | ,, | १० × ४।। |
| १६१७९ | नवतत्त्वप्रकरण विवरण | ६ | सं. | साधुरत्नसूरि | ५०० | | १५१५ | ,, | १०। × ४।। |
| १६१८० | ओघनिर्युक्ति | २२ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | गा. १,१६३ | | १५०२ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१८१ | आत्मबोधकुलक | ४ | ,, | जयशेखरसूरि | गा. ४३ | | १७४४ | ,, | १० × ४।। |
| १६१८२ | १. श्रावकाराधना<br>२. परमाणुषट्त्रिंशिका<br>३. पुद्गलषट्त्रिंशिका | ११ | गु<br>सं.<br>,, | | | | १६८५ | ,, | १०। × ४।।। |
| १६१८३ | निगोद षट्त्रिंशिका अवचूरि[५] | ५ | ,, | अभयदेवसूरि | | | १६मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१८४ | १. चतुर्विंशतिजिनस्तुति सावचूरि पंचपाठ<br>२. स्वयम्भूस्तोत्र सावचूरि पंचपाठ<br>३. नवतत्त्वप्रकरण[६] | ६ | सं.<br>,,<br>प्रा. | १. बप्पभट्टसूरि<br>२. समन्तभद्रस्वामी | | | १६मो | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६१८५ | जिनस्तोत्रद्वय सावचूरि पंचपाठ | २ | सं. | | | | ,, | ,, | १०।। × ४।। |

१. प्रति उदरे करडेली छे. २. चित्र पुष्पिका-कर्णिका सह. प्रथम पत्रमां भगवाननु चित्र छे. ३. देवा प्रभो स्तोत्र ४. देवेन्द्रसूरिथी अन्य ५. पत्र ३ नथी
६. अति सूक्ष्माक्षरी प्रति.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६१८६ | सूक्तावली | १५ | सं. | | | | १६मो | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६१८७ | सारस्वत व्याकरण संज्ञाप्रक्रिया | ६ | ,, | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | | | १७मो | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६१८८ | बालबोधज्योतिष अपूर्ण[1] | ७ | ,, | मुंजादित्य | | | १९मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६१८९ | सारस्वत धातुपाठ | ५ | ,, | | | | १६मो | जीर्ण | १०। × ४। |
| १६१९० | सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति अवचूरि तृतीयाध्याय तृतीय पादथी चतुर्थाध्याय पर्यंत आख्यातावचूरि | १४ | ,, | | | | १५मो | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६१९१ | सारस्वत व्याकरण पंचसन्धि | ४ थी ८ | ,, | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | | | १८मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६१९२ | समयसार प्रकरण | ७ | प्रा. | देवानन्दसूरि | २७५ | | १६मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६१९३ | कालिकाचार्यकथा सचित्र[2] | १६ | ,, | | गा. १२० | | ,, | ,, | १० × ४।। |
| १६१९४ | कल्याणमन्दिर स्तोत्र अवचूरि | ४ | सं. | | | | १७मो | ,, | १०। × ४। |
| १६१९५ | सम्यक्त्व रहस्यप्रकरण | ३ | प्रा. | सिद्धसूरि | गा. ६३ | | १६मो | ,, | १०।।। × ४। |
| १६१९६ | १. संग्रहणीप्करण साव[illegible]रि पंचपाट<br>२. नवतत्त्वप्रकरण साव[illegible]रि पंचपाट | १४ | प्रा.सं | १ मू. श्रीचन्द्रसूरि | मू. गा. २८५<br>मू. गा. २७ | | १४९९ | ,, | १०। × ४।। |
| १६१९७ | १. सम्यक्त्वगुण वर्णन स्वाध्याय<br>२ पंचमिथ्यात्वपरिहार सज्झाय<br>३. सम्यक्त्व सज्झाय<br>४. सामायिक सज्झाय | ७ | गु. | १. चरणकुमार<br>२. उदयविजय<br><br>४ नेमिदास | गा. ६८<br>गा. ११<br>गा. १२ | | १९मो | ,, | १० × ४।। |
| १६१९८ | लिंगानुशासन | ३ | सं. | हेमचन्द्राचार्य | | | १६१० | ,, | १० × ४।। |
| १६१९९ | वनस्पतिसप्ततिका प्रकरण सावचूरि पंचपाठ | ३ | प्रा.सं. | मुनिचन्द्रसूरि | गा. ७७ | | १६मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२०० | भगवतीसूत्र आलापक | २ | प्रा. | | | | ,, | ,, | १०। × ४। |
| १६२०१ | हेमधातुपाठ संक्षेप | २ | सं. | | | | १५मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६२०२ | सप्तपदार्थी | ४ | ,, | शिवादित्यमिश्र | | | १६४८ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२०३ | वाग्भटालंकार सावचूरि पंचपाठ | ८ | ,, | मू. वाग्भट | | | १५२४ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२०४ | १. सूर्यसहस्रनाम स्तोत्र<br>२. आदित्यहृदयस्तोत्र | ८ | ,, | | १३१<br>३१ | | १७मो | जीर्णप्राय | १०। × ४।। |
| १६२०५ | १. अनेकार्थध्वनिमंजरी | | | | १८० | | १५१५ | | |

१. श्लोक ११७ सुधी. २. सं. १६८३ मां अनन्तसागरने वहोरावेली प्रति. आदि : हय पडाणीय पयावी.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २. शब्दप्रभेदनाममाला | ६ | सं. | | १३२ | | | उत्तम | १० × ४॥ |
| | ३. एकाक्षरी नाममाला | | | ३. अमरकवि | २० | | | | |
| १६२०६ | कविकल्पद्रुमधातुपाठ | ८ | ,, | वोपदेव कवि | ३६९ | | १६मो | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२०७ | कातंत्रविभ्रम सटीक-सारस्वत-व्याकरणानुसारिणी टीका | ८ | ,, | | | | १७मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६२०८ | विदग्धमुखमण्डन | ७ | ,, | धर्मदास कवि | | | १६मो | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२०९ | वृत्तरत्नाकर टिप्पणी सह | ७ | ,, | मू. केदार भट्ट | | | १७मो | ,, | १०।।। × ४॥ |
| १६२१० | प्रज्ञापना तृतीयपद संग्रहणी वृत्ति | १३ | ,, | अभयदेवसूरि | | | १६६३ | ,, | १०। × ४॥ |
| १६२११ | शाम्ब-प्रद्युम्न प्रबन्धरास | १८ | गु. | समयसुन्दरगणि | गा. ५३५, ग्रं. ८०० | १६५९ | १७मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६२१२ | जयन्ती आलापक-भगवतीसूत्रगत | ६ | प्रा. | | | | ,, | ,, | १०। × ४॥ |
| १६२१३ | चतुःशरणप्रकीर्णक | ३ | ,, | वीरभद्रगणि | गा. ६४ | | ,, | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२१४ | रणसिंहराजकथा-जिनपूजाविषये गद्य | ४ | सं. | | | | ,, | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२१५ | आरम्भसिद्धि | ६ | ,, | उदयप्रभसूरि | ४६० | | १६मो | मध्यम | १०॥ × ४॥ |
| १६२१६ | कार्तिकश्रेष्ठि अधिकार-भगवतीगत | २ | प्रा. | | | | ,, | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६२१७ | सिद्धहेमशब्दानुसासन पंचमाध्याय पर्यन्त सूत्रपाठ | १२ | सं. | हेमचन्द्राचार्य | | | १५मो | मध्यम | १०॥ × ४॥ |
| १६२१८ | चतुर्दशस्वप्न बालावबोध | १० | गु. | | | | १६मो | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६२१९ | औक्तिक-समासादि स्वरूप | ३ | सं.गु. | | | | ,, | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२२० | शंखश्रावकालापक-भगवतीगत | ३ | प्रा. | | | | १७मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६२२१ | १. गौतम-केशीसन्धि | | अप. | | गा. ५० | | | | |
| | २. वीरस्तुति थोय | ३ | सं. | | गा. ४ | | १६मो | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२२२ | सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति-अवचूरि द्वितीयाध्याय द्वितीयपाद पर्यन्त | ७ | ,, | | | | १५मो | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२२३ | मदनरेखा कथा गद्य अपूर्ण | ४ | ,, | | | | १७मो | ,, | १०। × ४॥ |
| १६२२४ | लघुजातक सावचूरि पंचपाठ | २ | ,, | | | | १६मो | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६२२५ | कल्पसूत्रान्तर्गत अधिकार बालावबोध | १९ | गु. | | | | १५८५ | उत्तम | १०॥ × ४॥ |

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनास. | लेखनस. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६२२६ | रत्नकोश-वस्तुविज्ञानशतविवरण | १२ | सं. | | | | १५९६ | उत्तम | १०। × ४।।। |
| १६२२७ | त्रैवेद्यगोष्ठी | १५ | ,, | मुनिसुन्दरसूरि | | १४५५ | १४७८ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२२८ | हैमधातुपाठ | ५ | ,, | | ३५० | | १६मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२२९ | भगवती आलापक | १२ | प्रा. | | | | १७मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२३० | १. यतिलक्षणसमुच्चयप्रकरण | | ,, | यशोविजयजी | | | १८मो | ,, | १०।। × ४।। |
| | २. सामायिक स्वाध्याय | ८ | गु. | यशोविजयजी | | | | | |
| १६२३१ | लीलावतीभाषा कविता | १६ | गु. | लालचन्द | ७६० | १७३६ | १८मो | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६२३२ | योगविधि | ११ | प्रा.गु. | | | | १८६७ | ,, | १०। × ४।।। |
| १६२३३ | शोभनस्तुति अपूर्ण | २ | सं. | शोभनमुनि | | | १९मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६२३४ | भैरवपद्मावती कल्प सटीक[1] | ३२ | ,, | मल्लिषेण | | | १७२७ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२३५ | आचारोपदेश[2] | ११ | ,, | चारित्रसुन्दरगणि | | | १९मो | मध्यम | १०।। × ४।।। |
| १६२३६ | १. श्रावकालोचनाविधि | | | | | | | | |
| | २. उपधानविधि | १० | गु. | | | | १७मो | ,, | १०। × ४।।। |
| १६२३७ | विचारसारप्रकरण | १० | प्रा. | देवचन्द्रजी | गा. ३०५ | १७९६ | १७९९ | उत्तम | १०। × ५ |
| १६२३८ | द्वादशव्रतकथा गद्य | १७ | सं. | | | | १६मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२३९ | १. उपदेशरत्नकोश | | | | | | | | |
| | २. सन्देहविषौषधिप्रकरण | | | २. चन्द्रप्रभसूरि | गा. २७८ | | | | |
| | ३. दर्शनशुद्धि | १७ | प्रा. | | | | १५मो | ,, | १०।। × ४। |
| | ४. पंचरत्नआचार | | | | | | | | |
| | ५. षष्टिशतप्रकरण | | | ५. नेमिचन्द्र भन्डारी | गा. १६१ | | | | |
| १६२४० | पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण | ५ | ,, | अभयदेवसूरि | गा. १०८ | | १७मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६२४१ | योगशास्त्र चतुर्थ प्रकाश | ५ | सं | हेमचन्द्राचार्य | १३६ | | ,, | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२४२ | पंचसूत्र | ८ | ,, | | | | ,, | ,, | १०। × ४।। |
| १६२४३ | सम्बोधसप्ततिका प्रकरण | ३ | प्रा. | रत्नशेखरसूरि | गा. ७५ | | १६मो | ,, | ९। × ४।। |
| १६२४४ | त्रिंशच्चतुर्विंशतिकास्तोत्रकोश | १४ | सं. | ऋषिजगमालगणि | | १६३१ | १७मो | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२४५ | पिण्डविशुद्धि प्रकरण | २ | प्रा. | जिनवल्लभसूरि | गा. १०३ | | १६मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६२४६ | पिण्डविशुद्धि प्रकरण | २ | प्रा. | जिनवल्लभसूरि | गा. १०३ | | ,, | ,, | १०। × ४।।। |

१. पत्र २९-३० नथी. २. प्रति पाणीमां भींजावाथी अक्षरो भूंसाई गया छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६२४७ | चतुर्विंशतिजिनस्तुति सावचूरि त्रिपाठ | ३ | सं. | मू. धर्मघोषसूरि | का. २८ | | ,, | ,, | १०। × ४।। |
| १६२४८ | सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरण | ३ | प्रा. | | गा. ७० | | १५०५ | ,, | १०। × ४।। |
| १६२४९ | जय तिहुयण स्तोत्र[1] | ८ | ,, | अभयदेवसूरि | कडी ३० | | १६मो | मध्यम | १। × ४।। |
| १६२५० | गुणस्थानक्रमारोह प्रकरण | ४ | सं. | रत्नशेखरसूरि | १३७ | | ,, | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६२५१ | अथर्वोपनिषद्[2] | १३ | ,, | | | | ,, | ,, | १०। × ४।। |
| १६२५२ | पिण्डविशुद्धिप्रकरण अवचूरि | १० | ,, | | | | १४५८ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६२५३ | कालग्रहणविधि | २ | गु. | | | | १९मो | ,, | ९।।। × ४।।। |
| १६२५४ | गोयमभासिया | ३ | प्रा. | | गा. ४२ | | १८मो | ,, | १०। × ४।। |
| १६२५५ | लोकनालिका प्रकरण सस्तबक | ५ | गु. | | गा. ३२ | | १६मो | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६२५६ | सिद्धान्तगत गाथासंग्रह | २ | प्रा. | | गा. १८४ | | १५मो | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६२५७ | पर्यंताराधना प्रकरण | ६ | प्रा. | | गा. ७० | | | सारी | १०। × ४।। |
| १६२५८ | चतुःशरणप्रकीर्णक बालावबोध | १० | गु. | | ग्रं. ३४२ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६२५९ | मौनएकादशीकथा पद्य | ५ | प्रा. | | गा. १५८ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६२६० | १. आराधनाप्रकरण बालावबोध<br>२. शाश्वतजिनस्तवन | ३ | गु.<br>प्रा. | <br>देवेन्द्रसूरि | <br>गा. ३४ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६२६१ | भावनासंधि बालावबोध सह | १४ | अप.गु. | मू. जयदेव बा. गुणनिधानसूरि | मू.गा. ६२ | | १५५३ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२६२ | वीतरागस्तव अवचूरि | ७ | सं. | | ३७७ | | | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६२६३ | सिद्धहेमशब्दानुसासनविशेष-वृत्ति तृतीयाध्याय द्वितीयपाद पर्यंत[3] | ३१ | सं | | | | | जीर्ण | १०।। × ४।। |
| १६२६४ | सिद्धहेम शब्दानुशासनलघुवृत्ति-अवचूरि तृतीयाध्यायतृतीयपादथी चतुर्थाध्याय पर्यंत किंचिदपूर्ण-आख्यातवृत्ति अवचूरि[4] | २७ | सं. | हेमचंद्रसूरि | | | | सारी | १०।। × ४।। |
| १६२६५ | कातंत्र व्याकरण बालावबोध वृत्ति चतुष्कवृत्ति टिप्पनक[5] | २६ | सं.गु. | मेरुतुंगसूरि अंचलगच्छीय | १७५० | | | सारी | १०।। × ४।। |
| १६२६६ | १. वाग्भटालंकार साव० पंच० | १० | सं. | | | | | सारी | १०। × ४।। |

१. प्रति पाणीमां भींजाई जवाथी खराब थई छे. २. प्रति शुद्ध छे. ३. विशिष्टवृत्ति छे. ४. पत्र ९ मुं नथी. ५. जीवडाए खाधेली.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनस. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २. साधारणजिनस्तव साव० पंच० | | सं. | सोमप्रभसूरि | | | | | |
| १६२६७ | कल्पसूत्रांतर्गत अधिकार | ५ | ,, | | | | | सारी | ९।।। × ४।। |
| १६२६८ | सप्त स्मरणादि | ८ | प्रा.सं. | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६२६९ | प्रियमेलक चतुष्पदी | ०९ | गु. | समयसुंदर | ग्रं. ३२५ | १६७२ | १७७० | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६२७० | अजापुत्र चतुष्पदी अपूर्ण | १९ | ,, | | गा. २३० | | | | |
| १६२७१ | क्षमर्षिरास-खिमरिषिरास | २० | ,, | लावण्यसमय | ५१२ | १५८६ | १७९९ | ,, | १०। × ४।।। |
| १६२७२ | पंचपरमेष्ठि गीता | ११ | ,, | यशोविजय | २५५ | | १७८३ | ,, | १०।। × ५ |
| १६२७३ | दशविधयतिधर्मस्वाध्याय | ७ | ,, | ज्ञानविमलसूरि | गा. १३६ | | १८०९ | ,, | ,, |
| १६२७४ | साधारणजिनस्तवन बालावबोध सह त्रिपाठ | १४ | सं.गु. | मानविजय | | | | ,, | ,, |
| १६२७५ | सीमंधरजिनविज्ञप्तिरूप ३५० गाथानुं स्तवन | ३१ | गु. | उ. यशोविजयजी | ग्रं. ४७५<br>गा. ३५४ | | १७७२ | सारी | १०।। × ५ |
| १६२७६ | कल्पसूत्र ढाल | ३५ | ,, | ज्ञानविमलसूरि | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६२७७ | जम्बूस्वामीरास | ११ | ,, | ज्ञानविमलसूरि | ग्रं. १०३५<br>गा. ६०८ | १७३८ | १७७२ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६२७८ | रोहिणीरास | ३७ | ,, | ज्ञानविमलसूरि | | १७७४ | १८२२ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६२७९ | स्नात्रपंचाशिका बालावबोध | ३० | ,, | शुभशील | | | १८३१ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १३२८० | गुणावलिरास-बुद्धिविषये | १५ | ,, | जिनहर्ष | ६०० | १७५१ | १७६२ | ,, | ,, |
| १६२८१ | वत्सराज-देवराज रास | २४ | ,, | लावण्यरत्न | गा. ४७४ | १५७१ | | ,, | १० × ४।। |
| १६२८२ | जम्बूस्वामिरास | ५८ | ,, | जिनहर्ष | | १७६० | | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६२८३ | बोलविचार | २ | ,, | | | | | ,, | १० × ४।।। |
| १६२८४ | प्रियमेलक चतुष्पदी[1] | ८ | ,, | समयसुंदर | गा. २३० | १६७२ | | ,, | १० × ४।। |
| १६२८५ | गुरुगुणछत्रीश छत्रीशी स्वाध्याय | २ | ,, | गुणहर्षशिष्य | गा. ४३ | | | ,, | ,, |
| १६२८६ | १. ऋषिदत्ताचरित्ररास | २० | ,, | गुणसौभाग्य | गा. ५४१<br>ग्रं. ८५० | १६४३ | | ,, | ,, |
| | २. तेरकाठीआसज्झायादि | | ,, | धर्मरत्न | गा. ८० | | | | |
| १६२८७ | १. आलोयणछत्रीशी | ६ | ,, | समयसुंदर | | १६६८ | | ,, | ९।।। × ४। |

१. एक खुणेथी उंदरे करडेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २. पुण्यछत्रीशी } | | गु. | समयसुंदर | | | | | |
| | ३. कर्मछत्रीसी } | | गु. | समयसुंदर | | | | | |
| १६२८८ | सीमंधरजिन १२५ गाथानुं स्तवन | ७ | ,, | उ. यशोविजयजी | गा. १३० | | १८१५ | सारी | १० × ४।। |
| १६२८९ | १. नेमिजिनस्तुति } | ४ | ,, | गुणविजय | गा. ४ | | | ,, | ,, |
| | २. धनाअणगारस्वाध्याय } | | ,, | लक्ष्मीरुचि | गा. १५ | | | | |
| १६२९० | नेमिजिनफाग-शीलरक्षाप्रकाशरास | १० | ,, | विजयदेवसूरि (पार्श्वचंद्रीय) | | | | जीर्णप्राय | १०।। × ४।। |
| १६२९१ | सुरप्रियकुमाररास | ४ | ,, | लक्ष्मीरत्नसूरि | गा. ६९ | | | सारी | १० × ४।।। |
| १६२९२ | १. शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन } | ६ | ,, | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| | २. स्तुति नमस्कारादि संग्रह } | | ,, | | | | | | |
| १६२९३ | साधुवंदना | २१ | ,, | नयविमल (ज्ञानविमल) | ७०५ | १७८२ | | ,, | १० × ४।।। |
| १६२९४ | उपधानविधिस्तवन | २ | ,, | उ. विनयविजय | गा. २६ | | | ,, | ९। × ४ |
| १६२९५ | अनेकार्थसंग्रह टिप्पणीसह पंचपाठ[१] | ३८ | सं. | हेमचंद्राचार्य | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६२९६ | साधुवंदना[२] | १७ | गु. | नयविमल (ज्ञानविमल) | गा. ५०७ | १७८२ | | ,, | १० × ४।। |
| | | | | | ६५५ | (१७२८?) | | | |
| १६२९७ | गजसुकुमालरास | ५ | गु. | शुभवर्धनशिष्य | गा. ९४ | | १७४२ | सारी | १० × ४।। |
| १६२९८ | सूरसेनरास-जीवदयाविषये | २४ | ,, | हर्षराज पंडित | गा. ९४१ | १६१३ | | ,, | ,, |
| १६२९९ | चतुर्विंशतिजिनगीत | ७ | ,, | जिनराजसूरि | | | | ,, | ९।।। × ४।। |
| १६३०० | ढोलामारुचतुष्पदी | १७ | ,, | कुशललाभ | गा. ७०४ | १६१७ | | ,, | १० × ४।। |
| १६३०१ | श्रुतविचार | ४२ | प्रा.सं.गु | सहजकुशल | | | | मध्यम | १०।। × ४।। |
| १६३०२ | नवतत्त्वरास | ३८ | गु. | ऋषभकवि | ११५० | १७६३ | १७६६ | सारी | ,, |
| १६३०३ | पार्श्व-वीरजिनस्तवन | ३ | ,, | ज्ञानविमलसूरि | | | | ,, | १०।।। × ४।।। |
| १६३०४ | पांचकुगुरुसज्झाय आदि सज्झायो | ७ | ,, | उ. यशोविजयजी | | | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६३०५ | त्रिभुवनदीपकप्रबंध | १३ | ,, | जयशेखरसूरि | गा. ४१८ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३०६ | उत्तराध्ययनसूत्र सटीक सुखबोधावृत्ति | २३९ | प्रा.सं. | टी. नेमिचंद्रसूरि | १४७५० | वृ. ११२९ | १६६६ | ,, | ,, |
| १६३०७ | कल्पकिरणावली सटीक. त्रिपाठ. | २१३ | ,, | टी. धर्मसागरोपाध्याय | | | १६९० | ,, | १०। × ४।। |
| १६३०८ | कल्पकिरणावली सटीक. त्रिपाठ.[३] | १५४ | ,, | ,, | | | | जीर्ण | १० × ४। |
| १६३०९ | उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक[४] | २६१ | प्रा.गु. | | | | | सारी | ,, |

१. अतिशुद्ध खुणेथी उधइए खाधेली २. श्रीज्ञानविमलसूरिए स्वहस्ते लखेली. ३. चोंटेली. ४. माणिक्यशेखरी दीपिकानुसारी.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६३१० | सम्यक्त्वसप्ततिका बालावबोध सह. त्रिपाठ | १४५ | प्रा.गु. | रत्नचंद्रगणि | | १६७६ | १७८९ | सारी | १० × ४। |
| १६३११ | उत्तराध्ययनसूत्र सटीक | ३४१ | प्रा.सं. | टी. नेमिचंद्रसूरि | १४००० | टी.११२९ | | ,, | ९।।। × ४।। |
| १६३१२ | पद्मचरित्र-पउमचरियं | ३०६ | प्रा. | विमलसूरि नागीलगच्छीय | १०००० | ६० | १६२० | मध्यम | १० × ४।। |
| १६३१३ | श्रुतविचार बालावबोध सह | ३८ | प्रा.गु. | | | | | सारी | ९।।। × ४।। |
| १६३१४ | श्राद्धदिनकृत्यप्रकरण-सस्तबक | ३७ | ,, | मू.देवेन्द्रसूरि. स्त. धर्मचंद्रोपाध्याय | | | १७६३ | ,, | १० × ४।। |
| १६३१५ | उत्तराध्ययनसूत्र सटीक[१] | २४४ | प्रा.सं. | टी. नेमिचंद्रसूरि | १४००० | टी.११२९ | | ,, | ,, |
| १६३१६ | भगवतीसूत्र सटीक पंचपाठ | ६७४ | ,, | टी. अभयदेवसूरि | मू. १५७५२ टी. १८६१६ | टी.११२८, | १६१५ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३१७ | भगवतीसूत्र सटीक पंचपाठ[२] | ४६४ | ,, | टी. अभयदेवसूरि | ३४३६८ (उभयना) | ,, | ,, | ,, | ,, |
| १६३१८ | भगवतीसूत्रवृत्ति[३] | ३८८ | सं. | टी. अभयदेवसूरि | १८६१६ | ,, | | ,, | ,, |
| १६३१९ | भगवतीसूत्र सटीक त्रिपाठ[४] | ७७५ | प्रा.सं. | टी. अभयदेवसूरि | ३४३६८ | (उभयना) | १७२२ | ,, | १० × ४। |
| १६३२० | कल्पसूत्र सस्तबक[५] | ९५९ | प्रा. गु. | मू. भद्रबाहुस्वामी | | | १७३२ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६३२१ | नंदीसूत्र सटीक त्रिपाठ[६] | १९९ | प्रा. सं. | मू. देववाचक टी. मलयगिरि | टी. ७७३२ | | १८०० | सारी | १०। × ४।। |
| १६३२२ | नंदीसूत्र वृत्ति[७] | २६९ | सं. | टी. मलयगिरि | ७७३२ | | | ,, | १०। × ४। |
| १६३२३ | उत्तराध्ययनसूत्र | ३९ | प्रा. | | | | १५१० | ,, | १०।। × ४।। |
| १३३२४ | षडावश्यकसूत्रवृत्ति-वंदारुवृत्ति | ५६ | सं. | देवेन्द्रसूरि | २७५० | | १५५० | ,, | ,, |
| १६३२५ | आवश्यकनिर्युक्ति अक्षरार्थ अवचूरि[८] | २१५ | सं.गु. | | | | | ,, | ,, |
| १६३२६ | आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति | ५१ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | २५०० | | १४६६ | ,, | ,, |
| १६३२७ | आवश्यकसूत्र अवचूरि | ५३ | सं. | ज्ञानसागरसूरि | | १४४० | | ,, | ,, |
| १६३२८ | श्राद्धप्रतिक्रमणवृत्ति अर्थदीपिका | ९३ | ,, | रत्नशेखरसूरि | ६६४४ | १४९६ | | ,, | १०। × ४।। |
| १६३२९ | श्राद्धप्रतिक्रमणवृत्ति अर्थदीपिका | १२९ | ,, | रत्नशेखरसूरि | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| १६३३० | बृहत्क्षेत्रसमास सटीक | २१९ | प्रा.सं. | मू.जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण टी. मलयगिरि | ७५५५ | | १६५५ | ,, | ,, |

१. पत्र ९७, १९७ २२४, डबल छे. २. पत्र २४२ २४३ भेगां छे. ३. पत्र १८३ मु डबल छे. ४. पत्र ५४८-४९ भेगां छे. ५. पत्र १३३ मुं डबल छे. ६. पत्र ४९ मुं नथी. पत्र १३८ मुं डबल छे. ७. पत्र ३२ मुं डबल छे. ८. अंतिम पत्र नथी. पत्र ११८ मुं डबल छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६३३१ | कल्पसूत्र सचित्र | १२२ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | १२१६ | | | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६३३२ | कल्पसूत्र सचित्र[1] | ८५ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | ,, | | १५४२ | सारी | १०।। × ४।। |
| १६३३३ | कल्पसूत्र | २४१ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | ,, | | | ,, | १०।। × ४। |
| १६३३४ | कल्पांतर्वाच्य | ५० | सं. | | | | १५४२ | ,, | १०। × ४।। |
| १६३३५ | विचारामृतसंग्रह-विंशतिस्थानक चरित्र | ७७ | ,, | जिनहर्षसूरि | २८०० | १५२० | १७२८ | ,, | १० × ४।। |
| १६३३६ | कल्पसूत्र सस्तबक | १४१ | प्रा.गु. | मू. भद्रबाहुस्वामी | | | | जीर्णप्राय | १०। × ४। |
| १६३३७ | पंचसंग्रहटीका | १८४ | सं. | चंद्रर्षिमहत्तरस्वोपज्ञ | | | १५१५ | सारी | १०।। × ४।। |
| १६३३८ | उत्तराध्ययनसूत्र[2] | ४९ | प्रा. | | २०९५ | | | जीर्णप्राय | ,, |
| १६३३९ | उत्तराध्ययनसूत्र | ६५ | ,, | | २२१० | | १६११ | सारी | १०।।। × ४।। |
| १६३४० | नंदीसूत्र | २६ | ,, | देववाचक | | | | ,, | ,, |
| १६३४१ | उत्तराध्ययनसूत्र शब्दार्थ सावचूरि | १५० | प्रा.गु. | | ६५०० | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३४२ | नंदीसूत्र | २२ | प्रा. | देववाचक | | | | मध्यम | ,, |
| १६३४३ | पाक्षिकसूत्र सस्तबक | २३ | प्रा.गु. | | | | | सारी | १०।। × ४।।। |
| १६३४४ | षडावश्यकसूत्र सावचूरि | २३ | प्रा.सं. | अव. तिलकाचार्य | | | | मध्यम | १०।। × ४। |
| १६३४५ | नवतत्त्वप्रकरण बालावबोध सह[3] | २७ | प्रा.गु. | बाला. मेघराज | | | | सारी | १०। × ४।।। |
| १६३४६ | उपदेशमाला प्रकरण बालावबोध सह | ११० | प्रा.गु. | मू. धर्मदास गणि<br>बाला. सोमसुंदर | | | १५४६ | सारी | १०।। × ४।। |
| १६३४७ | षडावश्यकसूत्र-बालाव०सह | ६८ | ,, | बाला०मुनिसुंदर०शिष्य | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६३४८ | उपदेशमाला सटीक हेयोपादेयाटीका | ८५ | प्रा सं. | मू. धर्मदासगणि<br>टी. सिद्धर्षि | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३४९ | त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र सप्तमपर्व रामायण | १३९ | सं. | हेमचंद्राचार्य | ३९१८ | | | ,, | ,, |
| १६३५० | उपदेशमाला-सटीक-त्रिपाठ हेयोपादेयाटीका | ११६ | प्रा.सं. | मू.धर्मदासगणि<br>टी. सिद्धर्षि | ४००० | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६३५१ | शीलोपदेशमाला प्रकरण बालावबोध सह[4] | १८९ | प्रा.गु. | मू. जयकीर्ति<br>बाला०मेरुसुंदर | ६३५० | | | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६३५२ | उपदेशमाला प्रकरण[5] | ४३ | प्रा. | धर्मदासगणि | गा. ५४४ | | | जीर्ण | ,, |

१. ३५ सुंदर चित्रो छे. २. पत्र ३९ मु डबल छे. ३. पत्र २४-२५ भेगां छे. ४. पत्र ४४ थी ४७ नथी. ५. चोंटेली. लिपि चित्रमय

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोळाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६३५३ | दशश्रावकचरित्र वार्तिक | ३३ | गु. | | | | | सारी | १०। × ४।। |
| १६३५४ | चिंतामणि प्रथम परिच्छेद | ६३ | सं. | गंगेश्वर | | | १७०४ | सारी | १०। × ४।। |
| १६३५५ | चिंतामणि द्वितीय परिच्छेद | ६७ | ,, | गंगेश्वर | | | १७०४ | ,, | ,, |
| १६३५६ | विधिप्रपा[1] | १०६ | प्रा.सं. | जिनप्रभसूरि | ४६७२ | | | जीर्ण | १० × ४।।। |
| १६३५७ | देववंदनादि भाष्यत्रय बालावबोध सह. त्रिपाठ | ३८ | प्रा.गु. | मू. देवेन्द्रसूरि<br>स्त. ज्ञानविमलसूरि | स्त. १८५८ | | | सारी | १० × ४।। |
| १६३५८ | उपमितिभवप्रपंचाकथा[2] | ३११ | सं. | सिद्धर्षि | १६००० | ९६२ | १७१६ | ,, | १० × ४।। |
| १६३५९ | आचारदिनकर-बीजक सह[3] | २८३ | ,, | वर्धमानसूरि | १२५०० | | १७६६ | ,, | ,, |
| १६३६० | भवभावनाप्रकरण-बाला० सह | १५२ | प्रा.गु. | मू. मल. हेमचंद्रसूरि<br>बाला० माणिक्यसुंदर | | १७६३ | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६३६१ | शांतिनाथचरित्र[4] | १८१ | सं. | अजितप्रभसूरि | ६००० | | १६६३ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३६२ | महिपालचरित्र | ६३ | प्रा. | वीरदेवगणि | २२७१ | | | ,, | ,, |
| १६३६३ | स्नात्रपंचाशिका बालावबोध सह | २८ | सं.गु. | मू. शुभशील गणि | | | | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६३६४ | बंधस्वामित्वप्रकरण सावचूरि | १२ | प्रा.सं. | | | | | मध्यम | १० × ४।।। |
| १६३६५ | नवतत्त्वप्रकरण बालावबोध सह | ३२ | प्रा.गु. | | | | | सारी | १०।। × ४।।। |
| १६३६६ | उपसर्गहरस्तोत्र सटीक | ६ | प्रा.सं. | मू. भद्रबाहुस्वामी | | | | सारी | ९।।। × ४। |
| १६३६७ | देववंदनादिभाष्यत्रय बाला०सह | ५२ | प्रा.गु. | मू. देवेन्द्रसूरि<br>बाला० ज्ञानविमलसूरि | | | | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६३६८ | त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र सप्तम पर्व रामायण | ८७ | सं. | हेमचंद्राचार्य | ३७२१ | | १६२१ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३६९ | षष्टिशतकप्रकरण बालावबोध सह[5] | ३८ | प्रा.गु. | मू. नेमिचंद्र भंडारी | | | | जीर्ण | १०।। × ४।।। |
| १६३७० | आवश्यकनिर्युक्ति | ८० | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | २५५० | | | सारी | १०।। × ४।। |
| १६३७१ | उत्तराध्ययनसूत्रनिर्युक्ति | १५ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | ५६६ | | १६५२ | ,, | ,, |
| १६३७२ | आवश्यकनिर्युक्ति अवचूरि | ८७ | सं. | ज्ञानसागरसूरि | | | १४७६ | ,, | १०। × ४।। |
| १६३७३ | कल्पसूत्रनिर्युक्ति | ३ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | गा. ६७ | | | ,, | १० × ४।। |

१. एक खूणेथी उंदरे करडेली छे. २. पत्र ६९-७० तथा ८५-८६ भेगां छे. ३. पत्र २६७-२६८ भेगां छे. ४. पत्र १२४ मुं डबल छे. तथा पत्र १३० मुं नथी. ५. चोंटेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६३७४ | ओधनिर्युक्ति | ४० | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | गा. ११६४ | | १५०३ | सारी | १०। × ४।। |
| १६३७५ | पिण्डविशुद्धि अवचूरि | १० | सं. | | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३७६ | त्रिषष्टिशलाकापुरषचरित्र सप्तम पर्व रामायण | ११३ | सं. | हेमचंद्रसूरि | ३७२१ | | १६४९ | सारी | १०। × ४। |
| १६३७७ | पिण्डनिर्युक्ति सटीक | २३० | प्रा.सं. | मू. भद्रबाहुस्वामी<br>टी. वीरदेव गणि | ७६७१ | | १४९१ | मध्यम | १०। × ४। |
| १६३७८ | पंचाशक प्रकरण सटीक | १५९ | ,, | मू. हरिभद्रसूरि<br>टी. अभयदेवसूरि | ९९४२ | टी.११२४ | | सारी | १०।। × ४।। |
| १६३७९ | पंचाशक प्रकरण सटीक | १७४ | ,, | टी. अभयदेवसूरि | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| १६३८० | सनत्कुमार चरित्र[1] | २०९ | प्रा. | श्रीचंद्रसूरि | | १२१४ | | ,, | १०। × ४। |
| १६३८१ | दानादिकुलक सटीक धर्मरत्नमंजुषा | ३४० | सं. | मू. देवेन्द्रसूरि<br>टी. देवविजय गणि | १२७१६ | १६६६ | | ,, | १०। × ४।। |
| १६३८२ | पांडवचरित्रमहाकाव्य[2] | ३६१ | सं. | देवप्रभाचार्य मलधारी | १०००० | | | ,, | ९।।। × ४।। |
| १६३८३ | प्रज्ञापनासूत्र[3] | १०३ | प्रा. | श्यामाचार्य | ७७८७ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३८४ | प्रज्ञापनासूत्र[4] | ३२९ | ,, | श्यामाचार्य | | | १६२८ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३८५ | निरयावलिकासूत्र | ३१ | ,, | | ११०९ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६३८६ | राजप्रश्नीयोपांगसूत्र | ४७ | ,, | | २१२० | | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६३८७ | स्थानांगसूत्र[5] | ९५ | ,, | सुधर्मास्वामी | ३९३० | | | मध्यम | १०।। × ४। |
| १६३८८ | निरयावलिकासूत्र | २८ | प्रा. | | | | १६७५ | सारी | १०। × ४।। |
| १६३८९ | निरयावलिकासूत्र सटीक-त्रिपाठ | ३८ | प्रा. सं. | टी. श्रीचंद्रसूरि | १७१४ | | | उत्तम | १०। × ४। |
| १६३९० | निरयावलिकासूत्र | ३४ | प्रा. | | ११०९ | | १६६२ | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६३९१ | निरयावलिकासूत्र | ३३ | ,, | | १२५० | | १६६८ | उत्तम | १०। × ४।।। |
| १६३९२ | निरयावलिकासूत्र | ३२ | ,, | | १३१९ | | | जीर्णप्राय | १०। × ४।। |
| १६३९३ | अनुयोगद्वारसूत्र[6] | ६१ | ,, | | | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६३९४ | अनुयोगद्वारसूत्र | ४२ | ,, | | २००० | | | ,, | ,, |
| १६३९५ | अनुयोगद्वारसूत्र | ४० | ,, | | | | १७२१ | ,, | १०। × ४।। |

१. पत्र १०७ मुं तथा १४० मुं डबल छे. २. पत्र ८३-८४ भेगां छे. ३. चित्रपृष्ठिका सह ४. उधइए खाधेली छे. ५. एक खूणेथी उंदरे खाधेली छे. ६. प्रथम-द्वितीय पत्रमां महावीर गौतमनुं चित्र छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६३९६ | अनुयोगद्वारसूत्र | ७१ | प्रा. | | २००० | | | मध्यम | १०। × ४॥ |
| १६३९७ | अनुयोगद्वारसूत्र सटीक-त्रिपाठ | ५१-१०० | प्रा.स. | टी. हेमचंद्राचार्य मलधारी | | | | उत्तम | ,, |
| १६३९८ | आवश्यकसूत्र निर्युक्ति[1] | ५० | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६३९९ | आवश्यकसूत्र निर्युक्ति | ४५ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | | | | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| १६४०० | ओघनिर्युक्ति | २६ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | गा. ११८६ | | | मध्यम | ,, |
| १६४०१ | ओघनिर्युक्ति | २१ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | गा. ११६० | | | उत्तम | ,, |
| १६४०२ | ओघनिर्युक्ति | २३ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | गा. ११६४ | | | ,, | ,, |
| १६४०३ | ओघनिर्युक्ति | ३६ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | ,, | | ,, | ,, | ,, |
| १६४०४ | कल्याणमंदिरस्तोत्र-अवचूरि | ३ | सं. | | | | | मध्यम | १०। × ४। |
| १६४०५ | ओघनिर्युक्ति दीपिकाटीका सह | ९० | प्रा.सं. | मू. भद्रबाहुस्वामी<br>टी. माणिक्यशेखरसूरि | ५८०० | | १५०६ | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| १६४०६ | ओघनिर्युक्ति अवचूरि | ३३ | सं. | | | | १५२३ | ,, | ,, |
| १६४०७ | ओघनिर्युक्ति सटीक | १९३ | प्रा. सं. | मू. भद्रबाहुस्वामी<br>टी. द्रोणाचार्य | ७५७० | | | ,, | ,, |
| १६४०८ | पिण्डनिर्युक्ति सटीक | १२९ | ,, | मू. भद्रबाहुस्वामी<br>टी. मलयगिरि | ७५०० | | १५०२ | जीर्णप्रायः | ,, |
| १६४०९ | पिण्डनिर्युक्ति | १४ | प्रा. | भद्रबाहुस्वामी | गा. ७०० | | | उत्तम | ,, |
| १६४१० | त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र<br>सप्तम पर्व रामायण | १२० | सं. | हेमचंद्राचार्य | ३८४० | | १५६८ | ,, | १०। × ४॥ |
| १६४११ | दमयंतीकथाचंपू | ६३ | ,, | विक्रम भट्ट | २५०० | | | ,, | ,, |
| १६४१२ | दमयंतीकथाचंपू वृत्ति | २२३ | सं. | गुणविनय गणि | | | | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६४१३ | विचाररत्नाकर सबीजक[2] | २३३ | प्रा.सं. | कीर्तिविजयगणि | | | १६९० | ,, | ,, |
| १६४१४ | पार्श्वनाथचरित्र[3] गद्य | ११४ | ,, | उदयवीर गणि | ५००० | १६५४ | | ,, | १० × ४॥ |

१. प्रथम द्वितीय पत्रमां महावीर तथा गौतमनुं चित्र छे. २. उपा० विनयविजयजी स्वहस्ते लिखितप्रति प्रथमादर्श ३. एक बाजुथी भींजायेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६४१५ | शीलोपदेशमालाप्रकरण-सटीक | १७८ | प्रा.सं. | मू. जयकीर्तिसूरि<br>टी. विद्यातिलक | | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६४१६ | कर्मग्रंथ पंचक सावचूरि-त्रिपाठ | ४७ | ,, | | | | १६२० | ,, | ,, |
| १६४१७ | पुष्पमालाप्रकरण-बालाव०सह | १५६ | प्रा.गु. | बाला०मेरुसुंदर गणि | ६५०० | | १५२३ | ,, | १०। × ४।। |
| १६४१८ | गौतमपृच्छा सटीक[1] | १०९ | सं. | | ६७७७ | | १५१६ | मध्यम | १०।। × ४।। |
| १६४१९ | ज्ञानपंचमी कथा | ६ | ,, | कनककुशल गणि | १५२ | | | उत्तम | १० × ४।। |
| १६४२० | श्राद्धविधिप्रकरण-स्वोपज्ञवृत्ति | ११८ | प्रा.सं. | रत्नशेखरसूरिस्वोपज्ञ | | | | जीर्ण | १०। × ४।। |
| १६४२१ | प्रवचनसारोद्धार प्रकरण | ७१ | प्रा. | नेमिचंद्रसूरि | १५१७ | | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६४२२ | गौतमपृच्छा-सटीक | १८९ | सं. | श्रीतिलक | | | | मध्यम | १०।। × ४।। |
| १६४२३ | कर्मग्रंथपंचक-सावचूरि त्रिपाठ | ६४ | प्रा.सं. | मू. देवेन्द्रसूरि | | | | उत्तम | १०। × ४। |
| १६४२४ | कर्मग्रंथ षट्क सावचूरि पंचपाठ | ४१ | ,, | मू. देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४२५ | कर्मग्रंथपंचक बालावबोध | ३२ | गु. | | | | १५३७ | ,, | ,, |
| १६४२६ | कर्मग्रंथ षट्क[2] | १५ | प्रा. | देवेन्द्रसूरि | | | १६७८ | मध्यम | १०।। × ४।। |
| १६४२७ | पुष्पमाला प्रकरण सटीक | ६८ | प्रा.सं | मू. हेमचंद्रसूरि मल०<br>टी. साधुसोम गणि | | १५२२ | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६४२८ | षड्दर्शनसमुच्चय | ५ | सं. | राजशेखरसूरि | १७८ | | | जीर्ण | १०।। × ४।। |
| १६४२९ | चोवीसत्थो बालावबोध सह | ८ | प्रा.गू | | | | १७४९ | उत्तम | १०।। × ४।।। |
| १६४३० | श्राद्धजीतकल्पसावचूरि पंचपाठ | ९ | प्रा.सं. | मू. धर्मघोषसूरि | २२५ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४३१ | सिंदूरप्रकर | १० | प्रा. | सोमप्रभाचार्य | का. १०१ | | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६४३२ | नवतत्त्वप्रकरण बालाव०सह | १६ | प्रा.गू. | बाला०सोमसुंदरसूरि | ७५१ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४३३ | नवतत्त्वप्रकरण ,, | २२ | ,, | बाला०सोमसुंदरसूरि | ७५१ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४३४ | नवतत्त्वप्रकरण | २ | प्रा. | | गा. ४१ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४३५ | जीवविचारप्रकरण-सावचूरि त्रिपाठ | ६ | प्रा.सं. | मू. शांतिसूरि | | | १६९२ | ,, | ,, |
| १६४३६ | जीवविचारप्रकरण-सावचूरि त्रिपाठ | ४ | ,, | मू. शांतिसूरि | | | | ,, | १०। × ४।। |

१. पत्र ८६ मुं डबल छे. २. चोंटेली.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६४३७ | शोभनस्तुति सटीक | २३ | सं. | मू. शोभनाचार्य | १००० | | | मध्यम | १०।। × ४।। |
| | | | | टी. धनपाल | | | | | |
| १६४३८ | शोभनस्तुति सटीक | ४ | ,, | शोभनाचार्य | | | १६४० | ,, | १०। × ४।। |
| १६४३९ | सिंदूरप्रकर सावचूरि त्रिपाठ | १६ | ,, | मू. सोमप्रभाचार्य | | | १६५५ | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६४४० | वाग्भटालंकार सटीक | २१ | ,, | मू. वाग्भट | १०२५ | | | ,, | ,, |
| १६४४१ | वाग्भटालंकार सावचूरि त्रिपाठ | १२ | ,, | मू. वाग्भट | | | १६५१ | ,, | ,, |
| १६४४२ | वाग्भटालंकार | ७ | ,, | मू. वाग्भट | २९३ | | | ,, | ,, |
| १६४४३ | योगविधि | १४ | ,, | | | | | मध्यम | १०।। × ४।।। |
| १६४४४ | मुद्राविधि | ६ | ,, | | | | १६६३ | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६४४५ | जिनभवस्तोत्र | २ | ,, | सोमसुंदरसूरि | का. २७ | | | ,, | १० × ४।। |
| १६४४६ | १. चतुर्गति चतुष्पदी | ४ | गु. | वसगी | कडी ९६ | | | ,, | १०। × ४।। |
| | २. देवद्रव्यचतुष्पदी | | ,, | सोमसुंदरसूरि शिष्य | ,, ४५ | | | | ,, |
| १६४४७ | चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रादि सावचूरि त्रिपाठ | ४ | सं. | मू. मुनिसुंदरसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६४४८ | श्राद्धजीतकल्पसूत्र | ६ | प्रा० | धर्मघोषसूरि | गा. १४२ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४४९ | शालिभद्रचरित्र पद्य | २१ | सं० | धर्मकुमार | १४६३ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४५० | (१) ऋषिमंडलप्रकरण | ११ | प्रा० | धर्मघोषसूरि | गा. २१२ | | १६१२ | मध्यम | १०। × ४। |
| | (२) संबोधसप्ततिकाप्रकरण | | ,, | रत्नशेखरसूरि | गा. ७० | | | | |
| १६४५१ | भवभावनाप्रकरण साव.-पंचपाठ | १३ | प्रा०सं० | मू. मल ० हेमचंद्रसूरि | गा. ५३१ | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६४५२ | चतुःशरणप्रकीर्णक सटीक | ७ | ,, | मू. वीरभद्र गणि | | | १५०४ | ,, | ,, |
| १६४५३ | (१) चंद्रोदयकथा | | सं० | | | | | मध्यम | १०।। × ४। |
| | (२) वंकचूलकथा | ५ | प्रा० | | | | | | |
| १६४५४ | (१) चतुःशरणप्रकीर्णक | ७ | ,, | वीरभद्र गणि | | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| | (२) गौतमपृच्छा | | ,, | | | | | | |
| | (३) जीवविचारप्रकरण | | ,, | शांतिसूरि | | | | | |
| | (४) ऋषभपंचाशिका | | सं० | धनपाल | | | | | |
| | (५) प्रश्नोत्तररत्नमालिका | | ,, | विमल | | | | | |
| १६४५५ | स्थविरावली बालावबोध | ७ | गु० | | | | | ,, | ,, |

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६४५६ | कुर्मापुत्रकथा | ४ | प्रा० | जिनमाणिक्य | गा. १९५ | | १६०४ | मध्यम | १०॥ × ४॥ |
| १६४५७ | (१) चंद्रलेखाकथा | ५ | सं० | | | | | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| | (२) मृगसुंदरीकथा | | ,, | | | | | | |
| | (३) रणशूरकथा | | ,, | | | | | | |
| १६४५८ | कुरुचंद्रनृपादिकथा-वसत्यादिदानोपरि | ११ | ,, | | | १६२७ | | मध्यम | ,, |
| १६४५९ | स्थूलिभद्र चरित्र | १० | ,, | जयानंदसूरि | ६८६ | | | उत्तम | ,, |
| १६४६० | उपदेशमालाप्रकरण सावचूरि | ११ | प्रा०सं० | मू० धर्मदास गणि | | | | ,, | १०। × ४। |
| १६४६१ | (१) अजितशांतिस्तव अवचूरि[1] | | | | | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| | (२) लघुअजितशांतिस्तव अवचूरि | | | | | | | | |
| | (३) बृहद् अजितशांतिस्तव अवचूरि | १३ | सं०गु. | धर्मनंदन उपाध्याय | ९४ | | | | |
| | (४) जीरावलापार्श्वनाथस्तोत्र अवचूरि | | | | | | | | |
| | (५) महावीरस्वामिस्तव सावचूरि | | | मू० पादलिप्ताचार्य | मू० ४४ | | | | |
| १६४६२ | सारस्वत व्याकरण पंचसंधि | ८ | सं० | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | | | | ,, | १० × ४॥ |
| १६४६३ | (१) परमाणुविचारषट्त्रिंशिका सटीक | | | | | | | | १०॥ × ४॥ |
| | (२) पुद्गलषट्त्रिंशिका सटीक | | | | | | | | |
| | (३) निगोदषट्त्रिंशिका सटीक | | | | | | | | |
| | (४) बंधषट्त्रिंशिका सटीक | | | | | | | | |
| | (५) भवस्थितिस्तव | १० | सं०प्रा० | धर्मघोषसूरि | | | | | |
| | (६) देहस्थितिस्तव | | | ,, | | | | | |
| | (७) योनिस्तव | | | ,, | | | | | |
| | (८) लोकांतिकदेवस्तव | | | ,, | | | | | |
| | (९) लब्धिस्तव अपूर्ण | | | ,, | | | | | |
| १६४६४ | सारस्वत व्याकरण | ४४ | सं० | अनुभूतिस्वरूपाचार्य | | | १६५१ | ,, | १०। × ४। |
| १६४६५ | आचारोपदेश | ११ | ,, | चारित्रसुंदर | | | | ,, | १०॥ × ४। |
| १६४६६ | आलापपद्धति | ४ | ,, | देवसेन दिगंबर | | | १७७१ | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६४६७ | विचारामृतसंग्रह | ३३ | ,, | कुलमंडनसूरि | २६३५ | | १४८७ | ,, | ,, |
| १६४६८ | पंचदर्शनरहस्योपनिषद्[2] | २ | ,, | | | | | ,, | ,, |

१. जयशेखर कृत अजितशांतिस्तवननी अवचूरि. २. अध्याय ५, ९, ४० मो.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६४६९ | निगोदषट्त्रिंशिकाप्रकरण-सावचूरी पंचपाठ | ३ | प्रा०सं० | | | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६४७० | कल्पसूत्र सचित्र अपूर्ण[1] | २९ | प्रा० | भद्रबाहुस्वामी | - | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६४७१ | गोचरीना बेंतालीस दोष. सस्तबक | २ | प्रा.गु. | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४७२ | गौतमपृच्छा सस्तबक | १२ | ,, | | | | १६१५ | ,, | १०।। × ४। |
| १६४७३ | श्रावकव्रतभंगप्रकरण सावचूरि | ४ | प्रा०सं० | | | | | ,, | १०।। × ४। |
| १६४७४ | अल्पबहुत्वप्रकरण सावचूरि पंचपाठ महादंडक स्तोत्र | २ | | | | ,, | | | १० × ४। |
| १६४७५ | तर्कभाषा-सबीजक | ३४ | सं० | केशव मिश्र | | | १६६२ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४७६ | विचारषट्त्रिंशिका सावचूरि | २ | प्रा.गु. | मू० गजसार | | | १६०८ | ,, | १०। × ४। |
| १६४७७ | द्रव्यसंग्रह बालावबोध सह | १० | ,, | मू० नेमिचंद्र दिगंबर<br>बा० हंसराज खरतर | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४७८ | सिद्धपंचाशिका सावचूरि पंचपाठ | २ | प्रा.सं. | मू० देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४७९ | चतुर्विंशतिजिनस्तवन | ७ | सं० | | का.२६ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४८० | वृत्तरत्नाकर सटीक त्रिपाठ | ४ | ,, | भट्ट केदार | | | १५३६ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४८१ | (१) स्वप्नचिंतामणि<br>(२) स्वप्नाध्याय | १-९<br>९-१० | ,,<br>,, | जगदेव | ३१३<br>४२ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४८२ | कालिकाचार्यकथा | ११ | ,, | समयसुंदर | ४५० | १६६६ | १७७५ | ,, | १०। × ४।। |
| १६४८३ | संजयअध्ययन केशीगौतमीयाध्ययन | ३ | प्रा० | | गा० ५४ | | | ,, | ,, |
| १६४८४ | षडावश्यकसूत्र सस्तबक | १३ | प्रा०सं.गु | | | | | | |
| १६४८५ | मौनएकादशीकथा | ६ | प्रा० | | गा. १६० | | १६६८ | ,, | १०। × ४। |
| १६४८६ | विचारामृतसंग्रह प्रथमाधिकार | ५ | सं. | कुलमंडनसूरि | गा. ७५ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४८७ | वनस्पतिसप्ततिका | ५ | प्रा. | मुनिचंद्रसूरि | | | | ,, | १०।। × ४। |
| १६४८८ | पंचाशकप्रकरण | ३४ | ,, | हरिभद्रसूरि | ११०० | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४८९ | रत्नाकरपचीसी सावचूरि पंचपाठ | ५ | सं० | मू. रत्नाकरसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६४९० | त्रिभुवनसिंहप्रबंध | १९ | ,, | | ६८४ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४९१ | दर्शनरत्नाकर तृतीयलहरी पंचमतरंग[2] | ३३ | ,, | सिद्धांतसार तपागच्छीय | | | | ,, | १०। × ४।। |

१. चित्र साधारण छे. २. निगम पत्र ३३ मुं डबल छे.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६४९२ | सम्यक्त्वकौमुदी गद्य | ३० | सं० | | | | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६४९३ | (१) पुष्पमालाप्रकरण<br>(२) कर्मविपाक कुलक | १३ | प्रा० | हेमचंद्रसूरि मल० | गा. ५०५<br>गा. २३ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४९४ | संबोधसप्ततिका सस्तबक | १० | प्रा०गु० | रत्नशेखर | २३५ | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६४९५ | सम्यक्त्वसप्ततिका सस्तबक | ८ | ,, | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६४९६ | चाणाक्यराजनीति सस्तबक | १९ | सं.गु. | चाणाक्य | | | | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६४९७ | जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधि | १५ | प्रा०सं० | | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४९८ | श्रावकदिनकृत्यसावचूरि पंचपाठ | २१ | ,, | मू० देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६४९९ | नवकारबालावबोध आदि | ५ | प्रा०गु० | | | | | जीर्णप्राय | १०। × ४।। |
| १६५०० | (१) श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र<br>(२) संस्तारकविधि सावचूरि पंचपाठ | ३ | प्रा०सं० | | | | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६५०१ | श्रावकानुष्ठानविधि[1] वंदारुवृत्ति | ११ | सं० | देवेन्द्रसूरि | | | | मध्यम | १०।। × ४।। |
| १६५०२ | विचारामृतसंग्रह | २७ | ,, | कुलमंडनसूरि | २२०० | | १५२१ | उत्तम | ,, |
| १६५०३ | सामाचारी 卐आयारमयं वीर卐 | ११ | प्रा०सं० | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६५०४ | साधुसामाचारी | ११ | सं० | हरिप्रभसूरि | | | १७८३ | ,, | ,, |
| १६५०५ | वृत्तरत्नाकर | ५ | ,, | केदारभट्ट | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६५०६ | योगविधि | १९ | प्रा०सं० | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६५०७ | उपधानविधि-आदि | ७ | ,, | | | | १६४८ | ,, | ,, |
| १६५०८ | संग्रहणीप्रकरण सावचूरि त्रिपाठ | ३८ | ,, | मू. श्रीचन्द्रसूरि | | | १६४२ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६५०९ | संग्रहणीप्रकरण सटीक सावचूरि | ४९ | ,, | मू. देवभद्रसूरि | ३४२५ | | १५३२ | ,, | १०। × ४।। |
| १६५१० | संग्रहणीप्रकरण सावचूरि पंचपाठ[2] | १८ | ,, | मू. श्रीचंद्रसूरि | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६५११ | (१) इंद्रियपराजयशतक सस्तबक<br>(२) भववैराग्यशतक सस्तबक<br>(३) आदिनाथदेशनोद्धार सस्तबक | २७ | प्रा०गु०<br>,,<br>,, | | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६५१२ | कर्पूरप्रकर सावचूरि पंचपाठ | १७ | सं० | मू. हरिसाधु | मू. ३५० | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६५१३ | (१) इंद्रियपराजयशतक बाला. सह<br>(२) भववैराग्यशतक बाला. सह | १५ | प्रा०गु०<br>,, | | ८०० | | | ,, | ,, |

१. अपूर्ण भट्टारक श्री हीरविजयसूरीश्वरगुरुभ्यो नमः इति रिक्तलिपिचित्र गर्भित : २. पत्र ७ मुं नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (३) आदिनाथदेशनोद्धार बाला. सह | | प्रा०गु० | | | | | | |
| १६५१४ | कल्पसूत्र[1] अपूर्ण | १५० | प्रा० | भद्रबाहुस्वामी | | | १६६५ | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६५१५ | कल्पसूत्र किरणावली[2] सटीक | २०६ | प्रा०सं० | टी. धर्मसागरोपाध्याय | | | | मध्यम | १०।। × ४।। |
| १६५१६ | उत्तराध्ययनसूत्र सटीक सुखबोधिका[3] | २९८ | प्रा०सं० | वृ-नेमिचंद्रसूरि | | वृ-११२९ | | उत्तम | १०। × ४।।। |
| १६५१७ | उत्तराध्ययनसूत्र सटीक | २७४ | ,, | वृ-नेमिचंद्रसूरि | | ,, | १६२४ | ,, | १०।। × ४।।। |
| १६५१८ | उत्तराध्ययनसूत्र सावचूरि पंचपाठ[4] | १८९ | ,, | | | | | मध्यम | १०।। × ४।। |
| १६५१९ | दर्शनरत्नाकर[5] | ४८६ | सं० | सिद्धांतसार तपागच्छीय | | १५७० | | ,, | ,, |
| १६५२० | चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र वार्तिक बाला० सह[6] | १०० | ,, | | | | | ,, | ,, |
| १६५२१ | आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति | ४०२ | ,, | हरिभद्रसूरि | २२००० | | १५९८ | ,, | ,, |
| १६५२२ | उत्तराध्ययनसूत्र सटीक | २८७ | प्रा०सं० | टी.कमलसंयमोपाध्याय | | टी.१५४४ | १६६७ | ,, | १०। × ४। |
| १६५२३ | विजयचंद्रकेवलीचरित्र | ६९ | प्रा० | चंद्रप्रभसूरि | | ११२७ | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६५२४ | उपदेशचिन्तामणि सावचूरि | ९३ | सं. | मू. जयशेखरसूरि | | | | ,, | ,, |
| | | | | अव० महीमश्री साध्वी | ४३०५ | अव.१४७७ | | | |
| १६५२५ | सार्धशतकप्रकरण सटीक | ५९ | ,, | मू० जिनवल्लभ टी.धनेश्वरसूरि | | टी. ११७१ | | ,, | ,, |
| १६५२६ | कल्पसूत्र सावचूरि पंचपाठ[7] | ७५ | प्रा०सं० | मू. भद्रबाहुस्वामी | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६५२७ | श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र अर्थदीपिकावृत्ति[8] | २१५ | सं. | रत्नशेखरसूरि | ६६४४ | १४९६ | १६५८ | मध्यम | १० × ४।। |
| १६५२८ | कल्पसूत्र सावचूरि पंचपाठ[9] | ५० | प्रा०सं० | मू. भद्रबाहुस्वामी | ३६२२ | | १७०५ | ,, | १०। × ४।। |
| १६५२९ | उपदेशचिंतामणि सटीक स्वोपज्ञ[10] | २५६ | ,, | जयशेखरसूरि स्वोपज्ञ | १२०९३ | १४३६ | | उत्तम | ,, |
| १६५३० | आचारप्रदीप[11] | ९० | सं० | रत्नशेखरसूरि | ४०६० | १५१६ | | ,, | १० × ४।। |
| १६५३१ | कल्पसूत्र सटीक त्रिपाठ कल्पकिरणावली | १८७ | प्रा०सं० | टी. धर्मसागरोपाध्याय | | | १७०१ | जीर्णप्राय | १०। × ४।। |
| १६५३२ | कल्पसूत्र सटीक त्रिपाठ कल्पसुबोधिका[12] | २३५ | ,, | टी. विनयविजयोपाध्याय | | | | उत्तम | ९।।। × ४।। |
| १६५३३ | उत्तराध्ययनसूत्र[13] | ५९ | प्रा० | | २०९५ | | १५८४ | मध्यम | १० × ४।। |
| १६५३४ | जीवविचारप्रकरण सावचूरि पंचपाठ | २ | प्रा०सं० | मू० शांतिसूरी | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६५३५ | साधुप्रतिक्रमणसूत्र सस्तबक | १३ | प्रा०गु | स्त० पार्श्वचंद्र | ३०५ | | | ,, | ,, |
| १६५३६ | संग्रहणीयप्रकरण सटिप्पनक | १३ | प्रा०सं० | मू० श्रीचंद्रसूरि | | | १६७६ | ,, | ,, |

१. पत्र ३२ मुं डबल छे. चोंटेली. २. पत्र ८३ मुं तथा १२९ मुं डबल छे. ३ पत्र ६१ तथा २४५ मुं डबल छे. पत्र ७६-७७ भेगां छे. ४. पत्र ५७ मुं डबल छे. ५ पत्र ४८४ मुं डबल छे. ६. एक खूणेथी उंदरे खाधेली छे. ७. प्रथम पत्रमां भगवाननुं सुंदर चित्र छे. ८. प्रति सारी. ९. पत्र २०२ मुं नथी. १०. पत्र ४६ मुं डबल छे. ११. पत्र २७ मुं डबल छे. १२. पत्र ८० मुं डबल छे. १३. प्रति उंदरे खाधेली छे.

| क्रमाक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६५३७ | षष्टिशतकप्रकरण बालावबोध सह[1] | २२ | प्रा०गु० | मू. नेमिचंद्र भंडारी | | | | मध्यम | ९।।।.×४।। |
| १६५३८ | भयहरस्तव | २ | प्रा० | मानतुंगसूरि | गा. २४ | | | ,, | ९।।×४।। |
| १६५३९ | आचारप्रदीप[2] | ८९ | सं० | रत्नशेखरसूरि | २५०० | १५१६ | | ,, | १०×४।। |
| १६५४० | सूक्तावलि | ३० | ,, | | | | १७२० | ,, | ९।।।×४।। |
| १६५४१ | (१) सकलार्हत्स्तोत्र | १ | सं० | हेमचंद्रसूरि | २६ | | | मध्यम | १०×४।। |
| | (२) गौतमस्वामिस्तोत्र | | ,, | देवानंद | काव्य ९ | | | | |
| १६५४२ | प्रबोधचिंतामणि | ३४ | ,, | जयशेखरसूरि | १९७६ | | १७३० | ,, | ,, |
| १६५४३ | सम्यक्त्वकौमुदी[3] | २९ | ,, | | | | | ,, | ,, |
| १६५४४ | (१) नयोपदेशप्रकरण | ६ | ,, | उ० यशोविजय | १४६ | | | ,, | ९।।।×४।। |
| | (२) चिंतामणिपार्श्वस्तोत्र | | ,, | | का-११ | | | | |
| | (३) वीतरागस्तोत्र | | ,, | | श्लो०१३ | | | | |
| १६५४५ | शत्रुंजयकल्प सस्तबक | ७ | प्रा०गु० | मू. धर्मघोषसूरि | | | १७१५ | ,, | ,, |
| १६५४६ | ऋषभपंचाशिका संस्कृतगु० सावचूरि | १० | ,, | मू. धनपाल अव. धर्मशेखरसूरि | ३६० | | १७५४ | | |
| १६५४७ | आगमअष्टोत्तरी सस्तबक | १५ | ,, | मू० अभयदेवसूरि | २९० | | | मध्यम | १०×४।। |
| १६५४८ | शत्रुंजयकल्प सस्तबक | ७ | ,, | मू० धर्मघोषसूरि | | | | ,, | ९।।।×४।। |
| १६५४९ | पर्यंताराधनाप्रकरण सस्तबक | ७ | ,, | मू० सोमसुंदरसूरि | | | १७१६ | ,, | १०×४।। |
| १६५५० | सिंदूरप्रकर | ७ | प्रा० | सोमप्रभाचार्य | का०९९ | | | ,, | ,, |
| १६५५१ | सिंदूरप्रकर | १० | ,, | सोमप्रभाचार्य | | ,, | | ,, | ,, |
| १६५५२ | योगदृष्टिस्वाध्याय सस्तबक | २६ | गु. | मू० उ० यशोविजय<br>स्त. ज्ञानविमलसूरि | | | | जीर्णप्राय | १०.×४।।। |
| १६५५३ | नपावली | ३० | ,, | | | | | उत्तम | १०×४।। |
| १६५५४ | देववंदनादिभाष्यत्रयसावचूरि पंचपाठ | ५ | प्रा०सं० | मू० देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०×४। |
| १६५५५ | संबोधसप्ततिकाप्रकरण सस्तबक | १३ | प्रा०गु० | मू० रत्नशेखरसूरि | ३५० | | | ,, | ९।।।×४।। |
| १६५५६ | पंचनिर्ग्रंथीप्रकरण सस्तबक | २३ | ,, | मू० अभयदेवसूरि | मू० ५१६ | | १७२२ | ,, | १०×४।। |
| | | | स्त० | उ० यशोविजय | स्त. ३५५ | | | | |
| १६५५७ | आलापपद्धति | १३ | सं० | देवसेन दिगंबर | | | | ,, | ,, |
| १६५५८ | कल्याणमंदिरस्तोत्र सटीक पंचपाठ | ८ | ,, | मू० सिद्धसेनसूरि<br>मू० देवतिलक उवकेशगच्छीय | | | | ,, | ,, |

१. चित्रपृष्ठिका वेल सहित २. पत्र २ थी ५ नथी तथा पत्र २८ मुं त्रण छे. ३. प्रति शुद्ध छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६५५९ | अष्टोत्तरीस्नात्रविधि | ७ | प्रा०सं. | | | | | उत्तम | १० × ४। |
| १६५६० | ऋषभपंचाशिका सस्तबक | १ | प्रा०गु० | मू. धनपाल<br>स्त. जीतविमल | २२५ | | १७४४ | | ,, |
| १६५६१ | तिजयपहुत्तस्तोत्र सावचूरि पंचपाठ | २ | प्रा०सं० | | | | | उत्तम | १० × ४। |
| १६५६२ | (१) द्वादशभावनास्वाध्याय<br>(२) एगुणतीसीभावना | ४ | गु०<br>,, | सकलचंद्र | | | १७४० | ,, | ९।।। × ४।। |
| १६५६३ | नवतत्त्वप्रकरण | ३ | प्रा० | | गा. ४३ | | | ,, | १० × ४। |
| १६५६४ | नवतत्त्वप्रकरण बालावबोध | ४४ | गु० | | ३००० | | १६३७ | ,, | १० × ४।। |
| १६५६६ | श्राद्धविधिप्रकरण वृत्तिसह | १५९ | ,, | रत्नशेखरसूरि स्वोपज्ञ | ६७६१ | १५०६ | | ,, | १० × ४।। |
| १६५६७ | संग्रहणीप्रकरण सस्तबक सचित्र[1] | ६० | प्रा.गु. | मू. श्रीचंद्रसूरि | | | १७११ | ,, | ९।।। × ४।। |
| १६५६८ | उत्तराध्ययनसूत्र | ८४ | प्रा० | | २२०० | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६५६९ | कल्पान्तर्वाच्य | ३३ | सं० | | | | १५३२ | मध्यम | ,, |
| १६५७० | उत्तराध्ययनसूत्र सचित्र[2] | ६८ | प्रा० | | | | | उत्तम | ,, |
| १६५७१ | व्यवहारसूत्र | २७ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | | | ,, | | १०।। × ४।।। |
| १६५७२ | निशीथसूत्र सस्तबक | १० | प्रा०गु० | | | ८१५ | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६५७३ | चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र | ७१ | प्रा० | | २००० | | | उत्तम | ,, |
| १६५७४ | उत्तराध्ययनसूत्र सावचूरि पंचपाठ | ९५ | प्रा०सं० | | | | १५४५ | ,, | १०। × ४।। |
| १६५७५ | उत्तराध्ययनसूत्र | ५९ | प्रा० | | २१०० | | | जीर्णप्राय | १०।। × ४।। |
| १६५७६ | उत्तराध्ययनसूत्र कथा[3] | २८ | प्रा०सं० | | | | १५६२ | मध्यम | १०। × ४।। |
| १६५७७ | दशवैकालिकसूत्र | २२ | प्रा० | शय्यम्भवसूरि | ७०० | | १६६७ | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६५७८ | बृहत्कल्प सावचूरि त्रिपाठ | ३० | प्रा०सं० | | १३१४ | | १८२२ | ,, | ,, |
| १६५७९ | उत्तराध्ययनसूत्र कथाओ[4] | ३-६० | सं० | | | | १५७१ | मध्यम | ,, |
| १६५८० | गौतमकेशीअध्ययन बालाव ० सह | १९ | प्रा०गु० | | ४४० | | | उत्तम | ९। × ४।। |
| १६५८१ | दशाश्रुतस्कंधसूत्रचूर्णि | ५६ | प्रा० | भद्रबाहुस्वामी | २२२५ | | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६५८२ | उत्तराध्ययनसूत्र सटीक सुखबोधिका टीका | २५२ | प्रा०सं० | वृ. नेमिचंद्रसूरि | १४००० वृ. ११२९ | | | ,, | १०। × ४। |

१. पत्र २२ मुं डबल छे. चित्रो साधारण छे. २. पत्र छेल्लुं नथी. चित्रो अतिसुंदर छे. ३. पत्र १६-१७ भेगां छे. ४. प्रत्र १-२ नथी.

| क्रमाक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनास. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६५८३ | प्रत्येकबुद्धकथा-उत्तराध्ययनसूत्रांतर्गत | १४ | प्रा. | | | | | | |
| १६५८४ | आदिनाथदेशनोद्धार सस्तबक | ७ | प्रा०गु० | | | | १७१२ | उत्तम | १० × ४ा। |
| १६५८५ | उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक | २२५ | ,, | | मू. २२०० | | | जीर्ण | १०। × ४ा। |
| १६५८६ | कल्पांतर्वाच्य | ५० | सं० | | | | १६४७ | उत्तम | १०। × ४ा। |
| १६५८७ | कल्पांतर्वाच्य | ७४ | ,, | | | | | ,, | ,, |
| १६५८८ | उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक | १३८ | प्रा.गु. | | | | १६२० | जीर्ण | १०। × ४। |
| १६५८९ | सम्यक्त्वसप्ततिका बालावबोध सह-त्रिपाठ | १४९ | गु. | रत्नचंद्रगणि | ५५५२ | १६७८ | | उत्तम | १०।। × ४ा। |
| १६५९० | परिशिष्टपर्व | १५१ | सं० | हेमचंद्रसूरि | ३४९२ | | १६०८ | ,, | १० × ४। |
| १६५९१ | पांडवचरित्र[1] गद्य | २५६ | ,, | देवविजयगणि | | १६६० | १६६१ | ,, | १० × ४ा। |
| १६५९२ | दमयंतीकथा चंपूवृत्ति अपूर्ण | १७३ | ,, | | | | ,, | मध्यम | १० × ४ा। |
| १६५९३ | तत्वार्थसूत्रभाष्य वृत्तिसह[2] | ६५२ | ,, | मू० उमास्वाति वृ. सिद्धसेनगणि | मू० २६८२ टी.० १८२८२ | | १७९४ | उत्तम | १०। × ४ा। |
| १६५९४ | श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति[3] अर्थदीपिकावृत्ति सह | २८४ | ,, | रत्नशेखरसूरि | ६६४४ | १४९६ | | ,, | १०।।। × ४ा। |
| १६५९५ | कर्मप्रकृतिप्रकरण सटीक त्रिपाठ | ३६१ | ,, | मू० शिवशर्मसूरि टी. यशोविजयजी | | | | | १०।। × ४। |
| १६५९६ | धर्मसंग्रहणीप्रकरण-सटीक त्रिपाठ | ३१५ | ,, | मू० हरिभद्रसूरि टी० मलयगिरि | | | | | १०। × ४ा। |
| १६५९७ | संग्रहणीप्रकरण बाला०सह०त्रिपाठ | ६६ | प्रा०गु. | मू० श्रीचंद्रसूरि बाला० शिवनिधान | | | १८०० | ,, | ,, |
| १६५९८ | सिद्धहेमशब्दानुशासन लघवृत्ति अवचूरि षष्ठपादपर्यंत किंचिदपूर्ण | २१ | सं० | | | | | ,, | ,, |
| १६५९९ | विजयचंद्रकेवलीचरित्र अष्टप्रकारा-पूजामय[4] | २८ | प्रा० | चंद्रप्रभमहत्तर | १०५० | ११२७ | १६४७ | ,, | १०। × ४। |
| १६६०० | विचारसंग्रह | १२ | गु. | | | | | ,, | १०। × ४ा। |
| १६६०१ | षडावश्यकसूत्र बालावबोध सह[5] | १०९ | प्रा०गु० | हेमहंसगणि | | | १६६७ | मध्यम | १०। × ४।।। |
| १६६०२ | श्रीचंद्रकेवलीरास-आनंदमंदिररास[6] | १९३ | गु. | ज्ञानविमलसूरि | ७६७९ | १७७० | | उत्तम | १०।। × ४।।। |
| १६६०३ | श्रेणिकरास-सम्यक्त्वसाररास | ३१ | ,, | सोमविमलसूरि | | १६०३ | | ,, | १०। × ४ा। |
| १६६०४ | प्रवचनसारोद्धारवृत्ति[7] | ४-२९४ | सं. | सिद्धसेनसूरि | १८५४९ | १२७२ | १८५९ | ,, | १०।।। × ४ा। |

१. पत्र १९९ मु डबल छे. २. पत्र १३०, १३६, २१८, २५८ मु डबल छे. पत्र २२३-२२४ भेगां छे. ३. प्रति शुद्ध छे. ४. पत्र २६ मु डबल छे. ५. पत्र ७९, ८०, ८३ मु नथी. ६. पत्र १९२ मु नथी. ७. पत्र १-३ नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनास. | लेखनस. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६६०५ | सप्ततिकाप्रकरण सस्तबक[1] | २-१७ | प्रा.गु. | | | | | | ११ × ४॥ |
| १६६०६ | उत्तराध्ययनसूत्र शब्दार्थरूप अवचूरि बालावबोध सह २५ अध्ययनपर्यंत अपूर्ण | ६२ | सं.गु. | | | | | उत्तम | १०॥ X ४॥ |
| १६६०७ | त्रिषष्टि शलाकापुरुष चरित्र दशम पर्व-महावीर चरित्र | १०६ | सं. | हेमचंद्राचार्य | | | | जीर्ण | १०॥ X ४॥ |
| १६६०८ | कर्मग्रंथषट्क | १५ | प्रा. | १-५. देवेन्द्रसूरि<br>६. चंद्रर्षिमहत्तर | | | १६८६ | उत्तम | १०॥ X ४॥ |
| १६६०९ | (१) श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण साव० त्रिपाठ० | १६ | प्रा.सं. | | | | १६७६ | ,, | ,, |
| | (२) क्षुल्लकभवावलि साव० त्रिपाठ० | | | मू. देवेन्द्रसूरि | | | | | |
| | (३) अल्पबहुत्वप्रकरण साव० त्रिपाठ० | | | समयसुंदरोपाध्याय | | | | | |
| | (४) विचारषट्त्रिंशिका साव० त्रिपाठ० | | | गजसार स्वोपज्ञ | | | | | |
| | (५) बंधस्वामित्वप्रकरण साव० त्रिपाठ० | | | | | | | | |
| १६६१० | श्रावकातिचार[2] | ८ | गु. | | | | १७७१ | ,, | ,, |
| १६६११ | दशश्रावकचरित्र गद्य | २१ | सं. | | | | १७७८ | ,, | १०॥ × ४॥। |
| १६६१२ | हेतुगर्भप्रतिक्रमणवधि[3] | ३३ | ,, | जयचंद्रसूरि | | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६६१३ | षडावश्यकसूत्र बालावबोध सह | ६२ | प्रा.गु. | हेमहंसगणि | | | १५०१ | ,, | १०। X ४। |
| १६६१४ | षडावश्यकसूत्र सावचूरि त्रिपाठ | २३ | प्रा. सं. | | | | | मध्यम | १०। X ४॥ |
| १६६१५ | भक्तामरस्तोत्र बालावबोध सह | २१ | सं. गु. | | ७७५ | | | उत्तम | १०॥ X ४॥ |
| १६६१६ | शालिभद्रचरित्र | २३ | सं. | धर्मकुमार | १२२४ | | १५१८ | ,, | ,, |
| १६६१७ | उपदेशमालाप्रकरण | ३८ | प्रा. | धर्मदास गणि | गा. ५४४ | | १५७१ | ,, | १०। X ४। |
| १६६१८ | (१) लोकनालिकाद्वात्रिंशिका प्रकरण[4] | २८ | ,, | | गा. ३२ | | | ,, | १०॥ X ४॥ |
| | (२) प्रज्ञापना तृतीयपद संग्रहणी | | ,, | अभयदेवसूरि | गा. १३२ | | | | |
| | (३) जंबूद्वीपसमास प्रकरण | | ,, | | ,, १३६ | | | | |
| | (४) कर्मविपाक-कर्मग्रंथ | | ,, | गर्गर्षि | ,, १६८ | | | | |
| | (५) कर्मस्तव कर्मग्रंथ | | ,, | | ,, ५७ | | | | |
| | (६) कर्मस्तव भाष्य | | ,, | | ,, ३२ | | | | |
| | (७) आगमिकवस्तुविचारसारप्रक० | | ,, | जिनवल्लभ गणि | ,, ९६ | | | | |

१. प्रथम पत्र नथी २. पत्र २जुं नथी. ३. पत्र १३-१४ भेगां छे. ४. बधां प्रकरणो टिप्पणी सहित छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (८) षडशीतिभाष्य | | प्रा. | | गा. ३८ | | | | |
| | (९) सार्द्धशतकप्रकरण | | प्रा. | जिनवल्लभ गणि | गा. १५२ | | | | |
| | (१०) सार्द्धशतकप्रकरण भाष्य | | ,, | | ,, ११० | | | | |
| | (११) बंधस्वामित्वप्रकरण | | ,, | | ,, ५४ | | | | |
| | (१२) शतकप्रकरण | | ,, | | ,, १११ | | | | |
| | (१३) शतकभाष्य | | ,, | | ,, २५ | | | | |
| १६६१९ | रत्नसंचयप्रकरण[१] | १३ | प्रा. | | ,, ४९६ | | १७५८ | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६६२० | उपसर्गहरस्तोत्र सटीक[२] | २१ | प्रा. सं. | जिनसूरि | | | १६४८ | ,, | ,, |
| १६६२१ | विवेकविलास | ३४ | सं. | जिनदत्तसूरि | | | १६४७ | ,, | ,, |
| १६६२२ | संग्रहणी प्रकरण सस्तबक | २७ | प्रा. गु. | मू. श्रीचंद्रसूरि | | | १७०४ | ,, | १०।। X ४।। |
| १६६२३ | तत्त्वार्थसूत्र स्वोपज्ञभाष्यसह | ३७ | सं. | उमास्वाति वाचक | | | १६५४ | ,, | १०। X ४।। |
| १६६२४ | प्रवचनसारोद्धार[३] | ७४ | प्रा. | नेमिचंद्रसूरि | गा. १६०६ | | १५५७ | ,, | १०। X ४।। |
| १६६२५ | प्रवचनसारोद्धार टिप्पणी सह[४] | ३१ | ,, | नेमिचंद्रसूरि | ,, | | | जीर्ण | १०।। X ४।। |
| १६६२६ | प्रवचनसारोद्धार | ४७ | ,, | नेमिचंद्रसूरि | ,, | | | उत्तम | ,, |
| १६६२७ | पुष्पमाला प्रकरण | १३ | ,, | हेमचंद्रसूरि मल० | ५०५ गा. | | १५२७ | ,, | १०।। X ४।। |
| १६६२८ | पुष्पमाला प्रकरण | १९ | ,, | हेमचंद्रसूरि मल० | ,, | | १५६९ | ,, | ,, |
| १६६२९ | उपदेशमाला प्रकरण | १५ | ,, | धर्मदासगणि | ५०४ गा. | | १५०२ | ,, | ,, |
| १६६३० | अभिज्ञानशाकुंतलनाटक टिप्पणी सह | ३७ | सं. | कालिदास | १३५१ | | | ,, | ,, |
| १६६३१ | श्राद्धदिनकृत्यप्रकरण | १६ | प्रा. | देवेन्द्रसूरि | ३४१ गा. | | | ,, | ,, |
| १६६३२ | योगशास्त्र चार प्रकाश लघुवृत्ति सह | ५२ | सं. | वृ. अमरप्रेमसूरि<br>मू. हेमचंद्राचार्य | २५०० | | | ,,<br>,, | ,,<br>,, |
| १६६३३ | योगशास्त्र चार प्रकाश साव. त्रिपाठ | २८ | ,, | मू. हेमचंद्राचार्य | ,, | | | ,, | ,, |
| १६६३४ | पुष्पमाला प्रकरण बालावबोध सह | ५३ | प्रा. गु. | मू. हेमचंद्राचार्य मल.<br>बा. मेरुसुंदरगणि | | | १५३८ | ,, | ,, |
| १६६३५ | उपदेशमाला प्रकरण कथा संग्रह | २१ | गु. | | | | १५४७ | ,, | १०। X ४।। |
| १६६३६ | उपदेशमाला प्रकरण अवचूरि | ,, | सं. | | | | | ,, | ,, |
| १६६३७ | उपदेशमाला प्रकरण | २३ | प्रा. | धर्मदासगणि | ५४४ गा. | | | उत्तम | १०।। X ४। |
| १६६३८ | पुष्पमाला प्रकरण अवचूरि[५] | २१ | सं. | | | | | ,, | ,, |

१. पत्र ८ मुं नथी. २. प्रियंकरनृप चरित्र ३. पत्र ४२, ४५-६१ नथी. पत्र ६७ मुं डबल छे. ४ चित्रवृष्टिका सह ५. पत्र ५ मुं नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६६३९ | शीलोपदेशमाला प्रकरण | ५ | प्रा. | जयकीर्तिसूरि | ११६ गा. | | | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६६४० | (१) परमाणुषट्त्रिंशिका प्रकरण | १० | सं. | रत्नसिंह | | | | ,, | १० X ४।। |
| | (२) पुद्गलषट्त्रिंशिका प्रकरण | | ,, | | | | | | |
| १६६४१ | संग्रहणीप्रकरण | १२ | प्रा० | श्रीचंद्रसूरि | ३३७गा० | | १७७७ | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६६४२ | गुर्वावली-त्रिदशतरंगिणी | २० | सं० | मुनिसुंदरसूरि | ४९०का | १४६६ | १५३५ | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६६४३ | संग्रहणीप्रकरण | २३ | प्रा० | श्रीचंद्रसूरि | २७४गा० | | १६३० | ,, | १०। X ४।।। |
| १६६४४ | योगसार | ३ | अपभ्रंश | योगचन्द्रमुनि | १०७गा० | | | ,, | ,, |
| १६६४५ | (१) आचारोपदेश | १५ | सं० | चारित्रसुंदर | | | १७२४ | ,, | १०।। X ४।। |
| | (२) योगदृष्टि समुच्चय | | ,, | हरिभद्रसूरि | २३० | | | | |
| | (३) योगसार | | ,, | | २०९ | | | | |
| १६६४६ | श्राद्धगुणविवरण-योगशास्त्रान्तर्गत | २२ | ,, | | | | १४९५ | ,, | ,, |
| १६६४७ | आउरपच्चक्खाण | ५ | प्रा० | वीरभद्रगणि | ८१गा० | | | ,, | १०।। X ४।।। |
| १६६४८ | ऋषिमंडल-प्रकरण | १२ | ,, | धर्मघोषसूरि | २१४गा० | | १७३४ | ,, | १०। X ४।।। |
| १६६४९ | तिथ्यादि सारणी | १४ | | | | | १८५९ | ,, | १०। X ४।। |
| १६६५० | विवेकविलास बालावबोध सह | ६० | सं०गु० | मू०जिनदत्तसूरि | ४०९५ | | १६१७ | ,, | ,, |
| १६६५१ | महिपालकथा | ४५ | प्रा० | वीरदेवगणि | १८१७ | | १६७३ | जीर्णप्राय | ,, |
| १६६५२ | त्रिषष्टिशलाकापु०च०सप्तमपर्व-रामायण | ८१ | सं० | हेमचंद्राचार्य | ४५०० | | १४७९ | उत्तम | ,, |
| १६६५३ | भवभावनाप्रकरण सस्तबक | ५८ | प्रा०गु० | मू०हेमचंद्रसूरि मल० | मू०५३१ गा० | | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६६५४ | षड्दर्शनसमुच्चय वृत्ति सह[1] | ४८ | सं० | मू० हरिभद्रसूरि वृ०गुणरत्नसूरि | | | १५३० | मध्यम | ,, |
| १६६५५ | जंबूस्वामीचरित्र-आलापकरूप | १६ | प्रा० | पद्मसुंदर | | | | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६६५६ | संग्रहणी प्रकरण सावचूरि | २९ | प्रा०सं० | मू०श्रीचंदसूरि | | | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६६५७ | विवेकमंजरी प्रकरण | ७ | प्रा० | आसड | १४४गा० | १२७८ | १५८९ | ,, | १०। X ४।। |
| १६६५८ | (१)कर्मविपाक प्रकरण | २९ | ,, | गर्गर्षि | १६८गा० | | | ,, | १०।। X ४।। |
| | (२)आगमिकवस्तुविचारसारप्रकरण-षडशीतिप्रकरण | | ,, | जिनवल्लभसूरि | ८६गा० | | | | |
| | (३)सार्द्धशतकप्रकरण | | ,, | जिनवल्लभसूरि | १५२गा० | | | | |
| १६६५९ | अंबडचरित्र[2] | ४० | सं० | मुनिरत्नसूरि | | | १६४२ | मध्यम | १०। X ४।। |
| १६६६० | सम्यक्त्वकौमुदी | ३६ | ,, | | १४२५ | | १६३७ | ,, | १०। X ४।। |

१. पत्र ३२ मुं नथी, उंदरे खाधेली. २. बोर्डरवाली प्रति.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६६६१ | संग्रहणीप्रकरण अवचूरि[१] | २० | सं० | | | | | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६६६२ | ऋषिमंडल प्रकरण | ११ | प्रा० | धर्मघोषसूरि | २१९गा० | | १६९२ | ,, | १०। X ४।। |
| १६६६३ | भक्तामरस्तोत्र सावचूरि त्रिपाठ | १० | सं० | मू०मानतुंगसूरि | | | | ,, | १० X ४।। |
| १६६६४ | ऋषिमंडल प्रकरण | १६ | प्रा० | धर्मघोषसूरि | २१९गा० | | | उत्तम | १० X ४।। |
| १६६६५ | ललितविस्तरा पंजिका | ४६ | सं० | मुनिचंद्रसूरि | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६६६६ | ललितविस्तरा चैत्यवंदना सूत्रवृत्ति | ३८ | ,, | हरिभद्रसूरि | १२७० | | | ,, | १०।। X ४। |
| १६६६७ | षोडशकप्रकरण वृत्ति सह | ५२ | ,, | मू० हरिभद्रसूरि<br>टी०यशोभद्रसूरि | २००० | | १६६४ | ,, | १०। X ४।। |
| १६६६८ | प्रवचनसारोद्धार विषमपदव्याख्या सह त्रिपाठ | ८५ | प्रा०सं० | मू०नेमिचंद्रसूरि<br>व्याख्या. उदयप्रभसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६६६९ | षष्ठिसंवत्सरी | २० | सं० | दुर्गदेव | | | १६३० | मध्यम | १०। X ४। |
| १६६७० | शशधर प्रकरण | २९ | ,, | शशधर | | | १५४१ | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६६७१ | संग्रहणी प्रकरण सटीक त्रिपाठ | ६१ | प्रा०सं० | मू०श्रीचंद्रसूरि<br>टी०देवभद्रसूरि | ३५०० | | | ,, | ,, |
| १६६७२ | (१)मृगांककथा<br>(२)दंतिकमंत्रीकथा<br>(३)खापराकथा<br>(४)गजमूषककथा<br>(५)सदयवत्सकथा<br>(६)चंपककथा<br>(७)धृष्टकथा | ३९ | सं० | | | | | मध्यम | ,, |
| १६६७३ | ज्ञानपंचमीकथा सस्तबक | १२ | सं. गु० | मू०कनककुशल | | १६५५ | १८२५ | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६६७४ | सुसढकथा | २० | प्रा० | | ५१२गा० | | १७६७ | मध्यम | ,, |
| १६६७५ | ज्ञानपंचमीकथा | ४१ | ,, | महेश्वरसूरि | २५०० | | | उत्तम | ,, |
| १६६७६ | अंबडकथा | १७ | गु० | जयमेरु | | | १५७१ | ,, | ,, |
| १६६७७ | शुकराजकथा | २८ | सं० | शुभशील | १०१८ | | १६४८ | ,, | १०।। X ४।। |
| १६६७८ | बारव्रतकथा-अनर्थदंड पर्यंत | ५६ | ,, | चारित्रकीर्तिवाचक | २५५० | | | ,, | १०। X ४।। |

१. पत्र ५ मुं नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६६७९ | बलिनरेन्द्रकथा-भवभावनांतर्गत | ३३ | सं० | | | | १५६१ | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६६८० | मणिपति-चरित्र बालावबोध | २५ | गु० | | १०९३ | | | ,, | ,, |
| १६६८१ | कर्मग्रन्थ षट्क | १८ | प्रा० | देवेन्द्रसूरि | | | १६५७ | ,, | ,, |
| १६६८२ | क्षेत्रसमास सावचूरि पंचपाठ | २३ | प्रा०सं० | सोमतिलकसूरि | ३७९ | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६६८३ | (१)आउरपच्चक्खाण | १७ | प्रा० | वीरभद्रगणि | ७१गा० | | | ,, | १०। × ४।। |
| | (२) भक्तपरिज्ञा | | | | १७२गा० | | | | |
| | (३)संथारा प्रकीर्णक | | | | १२२गा० | | | | |
| १६६८४ | योगशास्त्र चार प्रकाश | १९ | सं० | हेमचंद्रसूरि | | | १६७७ | मध्यम | ,, |
| १६६८५ | कयवन्ना चतुष्पदी-दानविषये | १७ | गु. | जयरंग | ६२०गा० | | १७२१ | उत्तम | १०।। × ४।।। |
| १६६८६ | कथासंग्रह[1] | ५-३९ | सं० | | | | | जीर्ण | १०।। × ४।। |
| १६६८७ | उत्तराध्ययनसूत्र | ४३ | प्रा० | | | | | उत्तम | ,, |
| १६६८८ | गुणवर्माचरित्र[2] | २-२४ | सं० | माणिक्यसुंदर सूरि | १८०८ | १४८४ | | ,, | ,, |
| १६६८९ | क्रियारत्नसमुच्चय[3] | २-९९ | ,, | गुणरत्नसूरि | | १४६६ | | ,, | ,, |
| १६६९० | पुष्पमाला प्रकरण[4] | २-१६ | प्रा० | हेमचन्द्रसूरि मल० | ५०५गा० | | | मध्यम | १०।। × ४। |
| १६६९१ | भोजप्रबन्ध अपूर्ण[5] | २-६२ | सं० | रत्नमंदिरगणि | | | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६६९२ | उत्तरराध्ययनसूत्र दीपिका[6] | ५-१७३ | | रत्नमंदिरगणि | ८६७० | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६६९३ | रत्नसारकुमार कथा अपूर्ण सुपात्रदाने पद्य | ११ | ,, | | | | | ,, | ,, |
| १६६९४ | रत्नसारकुमारकथा सुपात्रदाने पद्य अपूर्ण | १२-२७ | ,, | | | | | ,, | ,, |
| १६६९५ | प्रकीर्णक | ३ | ,, | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६६९६ | औक्तिक अपूर्ण | ५ | सं०गु० | | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६६९७ | शास्त्रीयविचार | ३ | प्रा०सं० | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६६९८ | वाग्भटालंकार सटीक अपूर्ण | ८ | सं० | मू०वाग्भट, टी०सिंहदेवगणि | | | | जीर्ण | १०।। × ४।। |
| १६६९९ | पंचाचारविवरण सटीक अपूर्ण | ५ | प्रा०सं० | | | | | उत्तम | ,, |
| १६७०० | कल्पसूत्रटीका सटीक अपूर्ण | सं० | | | | | ,, | ,, | |
| १६७०१ | आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति | ७६ | प्रा० | भद्रबाहुस्वामी | | | १५०३ | ,, | ,, |
| १६७०२ | पार्श्वनाथचरित्र | ९९ | सं० | भावदेवसूरि | ६४०० | | | ,, | ,, |

१. पत्र १-४ नथी २, ३, ४, ५, प्रथम पत्र नथी. ६. पत्र १-४ नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६७०३ | षडावश्यकसूत्र बालावबोध | ६० | गु० | हेमहंसगणि | | | १७८६ | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६७०४ | चैत्यवंदनादिसूत्र बालावबोध | १५ | ,, | | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६७०५ | वर्धमानदेशना | १३८ | प्रा० | शुभवर्धन | ५००० | १५५२ | १६६४ | ,, | ,, |
| १६७०६ | श्रावकानुष्ठान-विधि-वंदारुवृत्ति | ५२ | सं० | देवेन्द्रसूरि | २७२० | | | ,, | ,, |
| १६७०७ | विक्रमचरित्र | १२१ | ,, | शुभशीलगणि | | १४९० | | मध्यम | ,, |
| १६७०८ | पार्श्वनाथ चरित्र-महाकाव्य | ३०१ | ,, | भावदेसूरि | ६२०० | १४१२ | | उत्तम | १० X ४।। |
| १६७०९ | रूपसेन कथा | २५ | ,, | जिनसूरि | | | | मध्यम | १०। X ४।। |
| १६७१० | कर्मग्रन्थ पंचक बालावबोध सह | ४९ | प्रा०गु० | मू०देवेन्द्रसूरि | १८०० | | १५८५ | उत्तम | ,, |
| १६७११ | लघुक्षेत्रसमासप्रकरण | २४ | प्रा० | रत्नशेखरसूरि | २६४गा० | | | ,, | १० X ४।। |
| १६७१२ | जिनकल्याणकतप गणणुं | ३० | | | | | | ,, | १० X ४।।। |
| १६७१३ | कर्मग्रंथ षट्क सटीक[१] | ३४० | प्रा०सं० | देवेन्द्रसूरि स्वोपज्ञ, मलयगिरि | | | | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६७१४ | कर्मग्रंथ बालावबोध सह | ३२१ | प्रा०गु | मू० देवेन्द्रसूरि बा० यशसोम | | बा.१७०२ | १७६३ | ,, | १०।। X ४।।। |
| १६७१५ | आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्ति-शिष्यहिता | ४५७ | सं. | हरिभद्रसूरि | २२,००० | | | ,, | ,, |
| १६७१६ | आवश्यकसूत्र लघुवृत्ति | ४२१ | ,, | तिलकाचार्य | १२३२५ | | | मध्यम | १०। X ४।। |
| १६७१७ | आचारांगसूत्रवृत्ति | २६१ | ,, | शीलांकाचार्य | १२३०० | | | उत्तम | १०। X ४। |
| १६७१८ | शशधरसूत्र शेषीव्याख्या न्याय सिद्धांतदीपप्रभा | १२५ | ,, | शेषानंतभट्ट | ८३०० | | १७०६ | ,, | १० X ४।।। |
| १६७१९ | भावप्रकरण सावचूरि त्रिपाठ | ४ | प्रा०सं० | विजयविमलगणि स्वोपज्ञ | | १६२३ | १७८८ | ,, | १० X ४।। |
| १६७२० | (१) देववंदनादि भाष्यत्रय<br>(२) पाक्षिकसूत्र | ६ | प्रा०<br>,, | देवेन्द्रसूरि | | | १७४९ | ,, | ,, |
| १६७२१ | देववंदनादि भाष्यत्रय[२] | ६ | ,, | | १२६ गा० | | | ,, | ,, |
| १६७२२ | अजितशांतिस्तव सावचूरि पंच०[३] | ४ | सं० | | | | १६६२ | ,, | ,, |
| १६७२३ | स्वप्रसप्ततिका सटीक | १० | ,, | टी० सर्वदेवसूरि | ८०० | १२८७ | | ,, | १०।।। X ४। |
| १६७२४ | अष्टक प्रकरण | ७ | ,, | हरिभद्रसूरि | २६६ | | | ,, | ९।।। X ४।। |
| १६७२५ | ध्यानस्वरूप | १८ | गु० | भावविजय | ३०० | १६९६ | | ,, | १०। X ४। |
| १६७२६ | प्रशमरति प्रकरण | ८ | सं० | उमास्वातिवाचक | ३१५आर्या | | | ,, | ९।।। X ४।। |
| १६७२७ | जीवविचारप्रकरण बाला० सह | ७ | प्रा०गु० | मू० शांतिसूरि | मू०५१गा० | | | मध्यम | ,, |
| १६७२८ | योगवासिष्ठसार | ७ | सं० | | | | | सारी | ९।।। X ४। |
| १६७२९ | औपपातिकोपांग सूत्र | ४५ | प्रा० | | १३५० | | | मध्यम | १०।। X ४।। |

१. पत्र - २१४ मु डबल, २. देवेन्द्रसूरिथी जुदी, ३. उधेइए खाधेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६७३० | औपपातिकोपांग सूत्र | ३४ | प्रा० | | १३५० | | १५५९ | जीर्णप्राय | १०॥ × ४॥ |
| १६७३१ | औपपातिकोपांग सूत्र | २५ | ,, | | १२६७ | | | मध्यम | १०। × ४॥ |
| १६७३२ | औपपातिकोपांग वृत्ति[1] | ५८ | सं० | अभयदेवसूरि | ३१२५ | | | जीर्णप्राय | १०॥ × ४। |
| १६७३३ | औपपातिकोपांग वृत्ति | ७४ | ,, | अभयदेवसूरि | ,, | | | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६७३४ | औपपातिकोपांग अपूर्ण | ३१ | प्रा० | | | | | जीर्ण | १०॥ × ४। |
| १६७३५ | औपपातिकोपांग सूत्र | ५३ | ,, | | ११०५ | | | उत्तम | १०॥ × ४। |
| १६७३६ | औपपातिकोपांग सूत्र | ३४ | ,, | | ११६७ | | १५८५ | ,, | १०॥ × ४। |
| १६७३७ | औपपातिकोपांग सटीक पंचपाठ | ८३ | प्रा०सं० | अभयदेवसूरि | ४३०० | | | ,, | १०। × ४। |
| १६७३८ | औपपातिकोपांग सटीक पंचपाठ | ,, | ,, | अभयदेवसूरि | ,, | | | मध्यम | १०॥ × ४॥ |
| १६७३९ | राजप्रश्नीयोपांगसूत्रवृत्ति | ६९ | सं० | मलयगिरि | ३७५० | | | जीर्ण | १०॥ × ४॥ |
| १६७४० | राजप्रश्नीयोपांगसूत्र सटीक-त्रिपाठ | १४४ | प्रा०सं | वृ० मलयगिरि | ५७७० | | | उत्तम | ,, |
| १६७४१ | राजप्रश्नीयोपांगसूत्र स्तबक | १०४ | प्रा०गु० | | स्त०३२६८ | | | ,, | १०। × ४॥ |
| १६७४२ | राजप्रश्नीयोपांगसूत्र वृत्ति | ७१ | सं० | वृ० मलयगिरि | ३७०० | | | जीर्णप्राय | ,, |
| १६७४३ | दशवैकालिक सूत्र सस्तबक | ४४ | प्रा०गु० | मू०शय्यंभवसूरि | | | | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| १६७४४ | दशवैकालिक सूत्र सस्तबक | ५३ | ,, | मू०शय्यंभवसूरि | | | १७५१ | मध्यम | १०। × ४॥ |
| १६७४५ | दशवैकालिक सूत्र सस्तबक[2] | ८७ | ,, | मू०शय्यंभवसूरि | | | १६११ | उत्तम | ,, |
| १६७४६ | दशवैकालिक सूत्र सस्तबक वार्तिक | ५९ | ,, | मू०शय्यंभवसूरि स्त० राजचंद्रसूरि | स्त० | १६६७ | | ,, | ,, |
| १६७४७ | दशवैकालिक सूत्र सस्तबक | ,, | ,, | मू०शय्यंभवसूरि | ३००० | | | जीर्णप्राय | ,, |
| १६७४८ | दशवैकालिक बाला०सह | ५८ | ,, | मू०शय्यंभवसूरि स्त०राजहंस उपा० | ३२७५ | | | मध्यम | ,, |
| १६७४९ | दशवैकालिक बाला०सह | ९८ | ,, | मू०शय्यंभवसूरि | ३२०० | | १६०७ | उत्तम | ,, |
| १६७५० | दशवैकालिक बाला० त्रिपाठ | ६० | ,, | मू०शय्यंभवसूरि स्त०उपा०राजहंस | ३२७५ | | | ,, | १० × ४॥ |
| १६७५१ | यागविधि | | गु० | | | | | ,, | १०। × ४॥ |
| १६७५२ | दशवैकालिकसूत्र सावचूरि[3] | ५९ | प्रा०सं० | मू०शय्यंभवसूरि | | | १६४३ | जीर्ण | ,, |
| १६७५३ | दशवैकालिकसूत्र अवचूर्णी | १३ | सं० | | | | | उत्तम | १०॥ × ४॥ |
| १६७५४ | दशवैकालिकसूत्र अवचूर्णी | १९ | ,, | | | | | ,, | ,, |
| १६७५५ | दशवैकालिकसूत्र सावचूरि पंचपाठ | २३ | प्रा०सं० | मू०शय्यंभवसूरि | | | | ,, | १०। × ४॥ |
| १६७५६ | दशवैकालिकसूत्र सटीक त्रिपाठ | ७६ | ,, | मू०शय्यंभवसूरि टी० सुमतिसूरि | ३७०० | | १६६९ | ,, | ,, |

१. पत्र १८ मुं डबल छे २. चित्रपृष्ठिका सह ३. शब्दार्थ अवचूरि

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६७५७ | लोकस्वरूप[1] | १ | | | | | | उत्तम | २०।। × १० |
| १६७५८ | दशवैकालिक सूत्र | २० | प्रा० | शय्यंभवसूरि | ७०० | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६७५९ | नंदीसूत्रवृत्ति | १६४ | सं० | मलयगिरि | ७७३२ | | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६७६० | औपपातिकोपांगसूत्र सटीक पंचपाठ[2] | ८२ | प्रा०सं० | टी०अभयदेवसूरि | ४३०० | | | जीर्णप्राय | १० × ४।। |
| १६७६१ | उत्तराध्ययनसूत्र बाला०सह | १६१ | प्रा०गु० | | ६३५० | | | मध्यम | ,, |
| १६७६२ | उत्तराध्ययनसूत्र सस्तबक | १८४ | ,, | | | | १७०५ | उत्तम | ,, |
| १६७६३ | कर्मग्रन्थषट्क सटीक पंचपाठ[3] | २९२ | प्रा०सं० | १-५ देवेन्द्रसूरी स्वोपज्ञ | | | | मध्यम | १०।। × ४।। |
| | | | ६ | मलयगिरि | | | | | |
| १६७६४ | तत्वार्थाधिगमसूत्र भाष्य-वृत्ति[4] | २८२ | सं० | सिद्धसेन गणि | २२२८२ | | १६५४ | उत्तम | ,, |
| १६७६५ | कर्पूरप्रकर कथा-कथामहोदधि | २६ | ,, | मू०हरिसाधु, कथा सोमचंद्र | १८०० | १५०४ | १६११ | ,, | ,, |
| १६७६६ | कल्याणमंदिरस्तोत्र सावचूरि | ४ | सं | मू०सिद्धसेनसूरि अव०गुणरत्नसूरि | | | १५२३ | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६७६७ | कल्याणमंदिरस्तोत्र बाला० सह | ९ | सं०गु० | मू०सिद्धसेनसूरि बा०मनोहरदास दिगंबरी | | | | ,, | ,, |
| १६७६८ | देववंदनादिभाष्यत्रय साव० पंच० | ८ | प्रा०सं० | मू०देवेन्द्रसूरि अ०सोमसुंदरसूरि | | | १५१३ | ,, | १० × ४।। |
| १६७६९ | देववंदनादिभाष्यत्रय बाला० सह | १२ | प्रा०गु० | मू०देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०।। × ४।। |
| १६७७० | एकवीस ठाण प्रकरण सस्तबक | ७ | ,, | मू०सिद्धसेनसूरि | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६७७१ | एकवीस ठाण प्रकरण सस्तबक | ४ | प्रा० | मू०सिद्धसेनसूरि | ५८गा० | | १६०९ | ,, | १० × ४।। |
| १६७७२ | वीतरागस्तोत्र सावचूरि पंचपाठ | ६ | सं | मू०हेमचंद्राचार्य | मू०१८६ | | | ,, | १०। × ४।। |
| | | | | अव०प्रभानंदसूरि | अ०६२५ | | | | |
| १६७७३ | वीतरागस्तोत्र सावचूरि | ७ | ,, | मू०हेमचंद्रसूरि अ०विशालराजशिष्य | | अ०१५१२ | १५२२ | ,, | ,, |
| १६७७४ | वीतरागस्तोत्र सावचूरि | ९ | ,, | मू०हेमचंद्रसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६७७५ | श्रावकानुष्ठानविधि-वंदारुवृत्ति | ३४ | ,, | मू०देवेन्द्रसूरि | | २७२८ | १४७२ | ,, | १०।। × ४।। |
| १६७७६ | श्रावकानुष्ठानविधि-वंदारुवृत्ति | ३२ | ,, | मू०देवेन्द्रसूरि | | ,, | १४८२ | ,, | ,, |
| १६७७७ | इन्द्रियपराजय शतक सस्तबक | १० | प्रा०गु० | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६७७८ | इन्द्रियपराजय शतक | ६ | प्रा० | | | | | ,, | ,, |
| १६७७९ | षष्ठिशतक | ३ | ,, | मू० नेमिचंद्रभंडारी | १६१गा० | | | मध्यम | ,, |
| १६७८० | षष्ठिशतक सस्तबक | १४ | प्रा०गु० | मू० नेमिचंद्रभंडारी | | | १६२० | उत्तम | १०। × ४। |
| १६७८१ | प्रश्नषष्टिशतक अवचूरि[5] | १९ | सं० | मू०नेमिचंद्रभंडारी सा०जिनवल्लभ | | | १५४१ | ,, | १०।। × ४।। |

१. कपडा उपर २. शुद्ध करेली, पत्र-२३-२६ डबल छे ३. शुद्ध ४. चित्रपृष्ठिका सह ५.जिनहर्षसूरिराजना छन्दो

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६७८२ | भक्तामरस्तोत्र सटीक | १९ | सं० | मू०मानतुंगसूरि<br>टी०रत्नचंद्रगणि | | | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६७८३ | भक्तामरस्तोत्र | ३५ | ,, | मू०मानतुंगसूरिटी०गुणाकरसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६७८४ | (१) भक्तामरस्तोत्र त्रिपाठ<br>(२)कल्याणमंदिरस्तोत्रसटीक त्रिपाठ | १२ | ,,<br>,, | मू०मानतुंगसूरि<br>मू० सिद्धसेनसूरि | १५७२ | १४२६ | | ,, | ,, |
| १६७८५ | यतिप्रतिक्रमणसूत्र | ३ | प्रा० | | | | | ,, | १० × ४। |
| १६७८६ | यतिप्रतिक्रमणसूत्र बाला सह०[1] | २-१५ | प्रा०गु० | बा०लक्ष्मीरत्नसूरि | | बा०१६०६ | १६०७ | ,, | १०। × ४। |
| १६७८७ | (१)भववैराग्यशतक<br>(२)आदिनाथ देशनोद्धार | ७ | प्रा०<br>,, | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६७८८ | संग्रहणीप्रकरण सावचूरि त्रिपाठ | २८ | प्रा०सं० | मू०श्रीचंद्रसूरि | | | १६७१ | ,, | ,, |
| १६७८९ | संग्रहणीप्रकरण सस्तबक | ४० | प्रा०गु० | मू०श्रीचंद्रसूरि<br>स्त०ज्ञानमूर्ति | | | | ,, | १०। × ४। |
| १६७९० | दशावतार स्तुति | १४ | सं० | हनुमंत | १६९ | | १६४४ | ,, | १०। × ४।। |
| १६७९१ | दशावतार स्तुति | ९ | ,, | हनुमंत | | | १६४३ | ,, | १०। × ४। |
| १६७९२ | महिपाल चरित्र | ४८ | प्रा० | वीरगणी | १८०७गा० | | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६७९३ | (१)प्रतिक्रमणसूत्र<br>(२)नवस्मरणादि अनेक प्रकरणो | ९ | प्रा०सं० | | | | | ,, | ,, |
| १६७९४ | (१)प्रशस्तपादभाष्य द्रव्यपदार्थ<br>(२)न्यायावतार<br>(३)चिन्नभट्टी विषमपादपंजिका<br>(४)उपाधी प्रकरण | १४ | सं०<br>,,<br>,,<br>,, | प्रशस्तपाद<br>सिद्धसेन दिवाकर | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६७९५ | दर्शनसप्ततिका सावचूरि त्रिपाठ | ५ | प्रा०सं० | अ०शिवमंडन | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६७९६ | साधुपाक्षिक अतिचार | ४ | गु० | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६७९७ | पार्श्वनाथस्तोत्र सटीक | ५ | सं० | मू०बिल्हण | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६७९८ | बृहत्श्रुतबोध सावचूरि[2] | ,, | ,, | मू०कविकालिदास<br>अव०कांतिविजय | २७का० | | | ,, | ,, |
| १६७९९ | चन्द्रसूर्यमंडलविचार | ४ | प्रा० | मुनिचंद्रसूरि | | | | ,, | १०। × ४। |

१. प्रथम पत्र नथी. २. आ प्रतिमां नवां छंदोलक्षणो उमेरवामां आव्यां छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८०० | योगविधि अपूर्ण | १० | प्रा०सं० | | | | | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६८०१ | नवतत्त्वप्रकरण बालावबोध सह | ६४ | प्रा०गु० | | ३००० | | | मध्यम | ,, |
| १६८०२ | सिंदूरप्रकर सावचूरि पंचपाठ | १० | सं० | मू०सोमप्रभाचार्य | १५१० | | | उत्तम | ,, |
| १६८०३ | योगविधि[1] | २६ | प्रा०सं० | | | | १६८३ | जीर्ण | ,, |
| १६८०४ | योगविधि | २४ | ,, | | | | | उत्तम | १० × ४।। |
| १६८०५ | विचार संग्रह | ११ | ,, | | | | | ,, | १०। × ४। |
| १६८०६ | द्वादशव्रतोच्चारणविधि | १० | सं० | | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६८०७ | शोभनस्तुति सस्तबक | २१ | सं०गु० | मू०शोभनाचार्य | ७५० | | | ,, | ,, |
| | | | | स्त०भानुविजय | | | | | |
| १६८०८ | शोभनस्तुति[2] | १३ | सं० | | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६८०९ | वासुपूज्यवामी पुण्यप्रकाश स्तवन | २४ | गु० | सकलचंद्र तपा | | | १६७१ | ,, | ,, |
| १६८१० | ज्ञानपंचमी कथा | ६ | सं० | कनककुशलगणि | १५३ | १६५५ | | मध्यम | ९।।। × ४। |
| १६८११ | प्रतिष्ठाकल्प | १२ | प्रा०सं० | | | | १७०४ | उत्तम | १० × ४।।। |
| १६८१२ | कल्याणमंदिरस्तोत्रसटीक त्रिपाठ | १२ | सं० | मू०सिद्धसेनदिवाकर | | | | ,, | १० × ४।। |
| | | | | टी०माणिक्यचंद्र | | १६६८टी | | | |
| १६८१३ | विवेकविलास वृत्ति | १९५ | ,, | भानुचंद्रगणि | | १६७८ | | ,, | १०। × ४।। |
| १६८१४ | पांडवचरित्र महाकाव्य[3] | ३०७ | ,, | देवप्रभसूरिमल | १०,००० | | १८५८ | ,, | १० × ४।। |
| १६८१५ | दशवैकालिकसूत्र सटीक त्रिपाठ | ७१ | प्रा०सं० | मू०शय्यंभवसूरि | ३७०० | | १६५९ | ,, | ,, |
| | | | | टी०सुमतिसूरि | | | | | |
| १६८१६ | उत्तराध्ययन सूत्र | ८२ | प्रा० | | | | | उत्तम | १० × ४।। |
| १६८१७ | सभाशृंगार | ११ | गु० | | | | १७६९ | ,, | ९।। × ४। |
| १६८१८ | कनकावती आख्यान | ,, | ,, | हेमश्रीसाध्वी | | १६४४ | | | ९।।। × ४। |
| १६८१९ | तिजयपहुत्तस्तोत्र बाला० सह | ५ | प्रा०गु० | | | | | ,, | ९।।। × ४।। |
| १६८२० | ध्यानस्वरुपरास | १७ | गु० | भावविजय उपा० | २८५ | १६९६ | १७१७ | ,, | ९।।। × ४। |
| १६८२१ | पंचप्रतिक्रमणसूत्र विधि | १४ | ,, | | २७५ | | | ,, | ,, |
| १६८२२ | यतिजीतकल्प सटीक[4] | ९२ | प्रा०सं० | मू०सोमप्रभसूरि | ५५५१ | | | मध्यम | ९।।। × ४।। |
| | | | | टी०साधुरत्नसूरि | | | | | |

१. पत्र ११मुं डबल छे. २. चित्रपृष्ठिका सह ३. सं०१४८१मां लखेली प्रति उपरथी लखेली छे. ४. पत्र ४१मुं डबल छे.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८२३ | पार्श्वनाथ चरित्र गद्य | १२६ | सं० | उदयवीरगणि | ५५०० | १६५४ | १७६९ | उत्तम | १०॥ × ४।।। |
| १६८२४ | आवश्यकसूत्र निर्युक्ति[1] | १ २ ० | | भद्रबाहुस्वामी | | | १६६६ | ,, | १०। × ४॥ |
| १६८२५ | आराधना[2] | १३ | गु० | | २३५ | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६८२६ | देववंदनादिभाष्य सस्तबक | २० | प्रा०गु० | मू०देवेन्द्रसूरि | | | १६७८ | ,, | १०। × ४॥ |
| १६८२७ | इन्द्रियपराजयशतक सस्तबक | ८ | ,, | | | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६८२८ | आलोचनाविधि | ६ | प्रा० | | | | | ,, | १०। × ४॥ |
| १६८२९ | देववंदनादिभाष्यत्रय | ८,, | ,, | | | | | ,, | १०। × ४। |
| १६८३० | इन्द्रियपराजयशतक सम्यक्त्वोच्चारणादिविधि | ४ | गु०प्रा० | | | | | ,, | ,, |
| १६८३१ | देववंदनादिभाष्यत्रय | ९ | प्रा० | | | | १६९२ | ,, | ,, |
| १६८३२ | संग्रहणीप्रकरण अवचूरि | १४ | सं० | | | | १४८३ | जीर्णप्राय | १०॥ × ४॥ |
| १६८३३ | भगवतीसूत्र सबीजक अपूर्ण | ११ | गु० | | | | | मध्यम | १०। × ४॥ |
| १६८३४ | सिंदूरप्रकर सावचूरि त्रिपाठ | १२ | सं० | मू०सोमप्रभाचार्य | ८५० | | | उत्तम | १०। × ४। |
| १६८३५ | द्वयाश्रयकाव्य सवृत्ति प्रथमखंड | २२ | ,, | मू०हेमचंद्राचार्य<br>टी०अभयतिलक | १६७९ | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६८३६ | पंचनिर्ग्रंथी बालावबोध सह[3] | १७ | प्रा०गु० | मू०अभयदेवसूरि बा० मेरुसुंदर | | | १६१२ | ,, | ,, |
| १६८३७ | चतःशरणप्रकीर्णक बाला०पंचपाठ | ६ | ,, | | | | १६३९ | मध्यम | ,, |
| १६८३८ | पिंडविशुद्धि बाला०सह | २५ | ,, | मू०जिनवल्लभसूरि<br>स्त०संवेगदेवगणि | | | | उत्तम | १०। × ४॥ |
| १६८३९ | (१) अभिधानचिंतामणीशेषनाममाला<br>(२) एकाक्षरी नाममाला | ८ | सं | हेमचंद्राचार्य<br>अमरेन्द्रकवि | २२५<br>२४ | | | ,, | ,, |
| १६८४० | धर्मपरीक्षासामाचारी-आचारमयं० | २३ | प्रा० | | | | | ,, | ,, |
| १६८४१ | धर्मपरीक्षा | ५२ | सं | जिनमंडनगणि | १८५० | | | ,, | १०। × ४।।। |
| १६८४२ | श्राद्धप्रतिक्रमण सवृत्ति-अर्थदीपिका[4] | १३६ | ,, | रत्नशेखरसूरि | ६६४४ | १४९६ | १५२३ | ,, | १०। × ४॥ |
| १६८४३ | मुनिपतिचरित्र | ७१ | गु० | | ६०७गा० | | १५५० | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६८४४ | माघकाव्यसटीक पंचमसर्ग पर्यन्त संदेहविषौषधि वृत्ति सह[5] | ६८ | सं० | मू०माघकवि<br>टी०वल्लभकवि | | | | मध्यम | १०। × ४।।। |
| १६८४५ | कल्पसूत्र | ७४ | प्रा० | भद्रबाहुस्वामी | १२१६ | | | ,, | १०॥ × ४॥ |

१. पत्र ९८मुं डबल छे. २. पत्र ८-११ नथी ३. पत्र १-२ भेगां छे. ४. पत्र ४,१३०,१३४ डबल छे. ५. पत्र ६३मुं नथी, प्रति पाणीमां भींजाइ छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८४६ | दानादिकुलक चतुष्क बाला०सह | १४७ | प्रा०गु० | मू०देवेन्द्रसूरि | ६४२४ | | १७०२ | उत्तम | १०। × ४।। |
| १६८४७ | पिंडनिर्युक्ति सटीक | १८५ | प्रा०सं० | भद्रबाहुस्वामी<br>टी०मलयगिरि | ६५०० | | १६४८ | ,, | १०। × ४।। |
| १६८४८ | विचारसारोद्धार[१] | ७९ | प्रा०गु० | | | | | जीर्णप्राय | ,, |
| १६८४९ | प्रतिमाशतक सटीक | १८६ | सं० | उ०यशोविजय स्वोपज्ञ | ५८२५ | | १७८४ | ,, | १० × ४।। |
| १६८५० | त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र अष्टमपर्व नेमिनाथचरित्र | १६९ | ,, | हेमचंद्राचार्य | | | | उत्तम | १० × ४। |
| १६८५१ | आरम्भसिद्धि सटीक | १२७ | ,, | मू०उदयप्रभसूरि टी०हेमहंस | | टी०१५१४ | १६६१ | ,, | ,, |
| १६८५२ | ओघनिर्युक्ति सटीक | २१५ | प्रा०सं० | मू०भद्रबाहुस्वामी टी०द्रोणाचार्य | | | | ,, | १० × ४।। |
| १६८५३ | अनेकार्थनाममाला सटीक | २५१ | सं० | मू०हेमचंद्रसूरि टी०महेन्द्रसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६८५४ | प्रज्ञापनासूत्रवृत्तिउद्धार[२] | ५७ | ,, | लावण्यविजय | | | १६६८ | ,, | १० × ४। |
| १६८५५ | यतिजीतकल्प सटीक | १२० | प्रा०सं० | मू०सोमप्रभसूरि<br>वृ०साधुरत्नसूरि | | | १६६० | ,, | १०। × ४।। |
| १६८५६ | श्राद्धजीतकल्प सटीक | ९१ | सं० | मू० धर्मघोषसूरि | २६४७ | | १८२५ | ,, | १०। × ४।। |
| १६८५७ | यतिजीतकल्प नव्य | ८ | प्रा० | मू० सोमप्रभसूरि | ३३३गा० | | | मध्यम | १०। × ४। |
| १६८५८ | बृहत्कल्पसूत्र | १३ | ,, | | ३६१ | | | उत्तम | १०।। × ४।। |
| १६८५९ | व्यवहारसूत्र सावचूरि पंचपाठ | ३३ | प्रा०सं० | मू०भद्रबाहुस्वामी अव०सौभाग्यसागरसूरि | | | १८०९ | ,, | १०। × ४।।। |
| १६८६० | व्यवहारसूत्र सावचूरि त्रिपाठ | २१ | ,, | मू०भद्रबाहुस्वामी अव०सौभाग्यसागरसूरि | | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६८६१ | निशीथसूत्र सस्तबक | ६२ | प्रा०गु० | ,, | | | | ,, | ,, |
| १६८६२ | आवश्यकसूत्र निर्युक्ति[३] | १२४ | प्रा० | ,, | | | १५९५ | ,, | ,, |
| १६८६३ | आवश्यकसूत्र | ११५ | ,, | ,, | | | | ,, | ,, |
| १६८६४ | महानिशीथसूत्र | ८९ | ,, | | ४५०० | | १७६२ | ,, | १० × ४।।। |
| १६८६५ | जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिउपांगसूत्र | १२२ | ,, | | ४१५४ | | | ,, | १०। × ४।। |
| १६८६६ | प्रज्ञापनासूत्र | ३०४ | ,, | श्यामाचार्य | ८७०० | | | ,, | १०। × ४। |
| १६८६७ | प्रज्ञापनासूत्र | २८१ | ,, | श्यामाचार्य | ७७८७ | | १६६२ | ,, | १० × ४।। |
| १६८६८ | प्रज्ञापनासूत्र | १७३ | ,, | श्यामाचार्य | ७७८७ | | १७६५ | मध्यम | १०। × ४।। |

१. पत्र ७६मुं डबल, पत्र ७८मुं नथी, २. उद्धारकर्ताऐ स्वहस्ते लखेली प्रति, ३. पत्र ३० थी ३२ ८४-९० १०३-१०६ नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८६९ | जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र | १२१ | प्रा० | | ४४५४ | | | मध्यम | १० × ४॥ |
| १६८७० | निरयावलिकासूत्रवृत्ति | १७ | सं० | श्रीचंद्रसूरि | | | १६१० | मध्यम | १०। × ४॥ |
| १६८७१ | सिद्धांत आलापकोद्धार बालावबोध | ११३ | प्रा०गु० | | | | | ,, | १० × ४॥ |
| १६८७२ | स्थानांगसूत्र बाला०सह त्रिपाठ[1] | २९८ | ,, | मू०सुधर्मास्वामी | १४४८७ | | | उत्तम | ९॥। × ४। |
| १६८७३ | आवश्यकसूत्र लघुटीका[2] | २२९ | सं० | तिलकाचार्य | १२३२५ | १२९६ | | ,, | १०॥ × ५ |
| १६८७४ | महिपालचरित्र[3] | ५६ | प्रा० | वीरदेवगणि | १८०७गा० | | | ,, | १०॥ × ४। |
| १६८७५ | अंबडचरित्र | २९ | सं० | मुनिरत्नसूरि | १२६० | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६८७६ | रूपसेनचरित्र पद्य | ६२ | ,, | रविसागर | ६८८ | १६३६ | | ,, | ,, |
| १६८७७ | स्थूलिभद्र चरित्र | ११ | ,, | जयानंदसूरि | | | १४८४ | ,, | ,, |
| १६८७८ | चतुर्थ कर्मग्रंथ सस्तबक | ५६ | प्रा०गु० | मू०देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०। × ४॥। |
| १६८७९ | सिंदूरप्रकर सटीक | ४८ | सं० | मू०सोमप्रभाचार्य<br>टी०हर्षकीर्तिसूरि | | | १८४४ | ,, | ,, |
| १६८८० | आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति[4] | ४४ | प्रा० | भद्रबाहुस्वामी | | | | ,, | १०॥ × ४॥ |
| १६८८१ | तंदुलवैचारिक सस्तबक | ३८ | प्रा०गु० | स्त०पार्श्वचंद्र | | | १७६९ | ,, | १०। × ४॥ |
| १६८८२ | संग्रहणी प्रकरण सटीक त्रिपाठ | ४८ | प्रा०सं० | मू०श्रीचंद्रसूरि<br>टी०देवभद्रसूरि | ३५०० | | १७९६ | ,, | ,, |
| १६८८३ | स्याद्वादमंजरी | १०४ | सं० | मल्लिषेणसूरि | ३००० | | १६९६ | ,, | ,, |
| १६८८४ | दशवैकालिकसूत्र-सस्तबक | ५१ | प्रा०गु० | मू०शय्यंभवसूरि | ३३२५ | | १७३० | ,, | १० × ४॥ |
| १६८८५ | ओघनिर्युक्ति अवचूरि | ६२ | सं० | ज्ञानसागरसूरि | ३२०० | १४३९ | १६५६ | ,, | ,, |
| १६८८६ | सूत्रकृतांगसूत्र प्रथमश्रुतस्कंध[5] | ३-३२ | प्रा० | सुधर्मास्वामी | ८०० | | | ,, | ,, |
| १६८८७ | चंद्रार्कीय ज्योतिष[6] | ४-१४ | सं० | | | | | ,, | ,, |
| १६८८८ | शत्रुंजयमाहात्म्य[7] | २०२ | ,, | धनेश्वरसूरि | १०,००० | | | ,, | १०। × ४॥। |
| १६८८९ | (१) विद्याविलास चरित्र[8]<br>(२) मत्स्योदरी कथा<br>(३) मंगलकलश कथा | १३-२९ | सं०प्रा० | | | | | ,, | १० × ४। |
| १६८९० | (१) अष्टप्रकारी पूजा कथाओ<br>(२) रात्रिभोजनविषयक हंसकेशवकथा पद्य | १० | सं० | | | | | ,, | ,, |

१. पत्र १८७-१८९, १९५-१९८ नथी. २. शुद्ध छे. ३. पत्र २५ डबल, पत्र २६ ५३ नथी. ४. पत्र २८-२९ भेगां. ५. पत्र १-२ नथी. ६. पत्र १-३ नथी. ७. पत्र ८१-८२ नथी. सं. १७६६ मां पुण्यविजयजीए शोधेली प्रति. ८. पत्र १-२१ नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनु नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८९१ | गच्छाचारप्रकीर्णक सटीक बीजक सह | १५५ | प्रा०सं० | विजयविमलगणि | ५८५० | १६३४ | १७४४ | उत्तम | ९।।। X ४।।। |
| १६८९२ | शीलोपदेशमाला प्रक० बाला० सह | १९० | प्रा०गु० | बा०मेरुसुंदरोपाध्याय | | | | ,, | ९।।। X ४।। |
| १६८९३ | योगशास्त्र आद्य चार प्रकाश सस्तबक | ९९ | सं०गु० | मू०हेमचंद्रसूरि | | | १७३८ | ,, | ९।। X ४।। |
| १६८९४ | सन्मतितर्कप्रकरण तत्वबोधविधायिनी टीका सह[1] | ५०४ | प्रा०सं० | मू०सिद्धसेन दिवाकर<br>टी०अभयदेवसूरि तर्कपंचानन | २५,००० | | १७३४ | उत्तम | ९।।। X ४।। |
| १६८९५ | त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र महाकाव्य अष्टमपर्व-नेमिनाथचरित्र | १०३ | सं० | हेमचंद्रसूरि | | | १६६७ | ,, | ,, |
| १६८९६ | जंबूस्वामीचरित्र पद्य | १४ | ,, | | ७२६गा० | | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६८९७ | कालिकाचार्यकथा बालावबोध | १९ | गु० | | | | | मध्यम | १०। X ४।। |
| १६८९८ | अष्टप्रकारीपूजा विजयचंद्रकेवलि-चरित्रांतगर्त | २५ | प्रा० | चंद्रप्रभसूरि | | | | उत्तम | १०।। X ४। |
| १६८९९ | कर्मग्रंथषट्क | १५ | ,, | देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६९०० | षष्टिशतक बालावबोध सह | ६० | प्रा०गु० | मू०नेमिचंद्र भंडारी | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९०१ | श्रीपाल चरित्र | ५६ | प्रा० | रत्नशेखरसूरि | १६७४<br>१३४०गा० | | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६९०२ | (१)कर्मविपाक प्रकरण[2]<br>(२)आगमिकवस्तुविचारसार प्रक०<br>(३)सार्द्धशतक प्रकरण<br>(४)सप्ततिका प्रकरण<br>(५)शतक प्रकरण | ५९ | ,, | गर्गर्षि<br>जिनवल्लभगणि<br>जिनवल्लभगणि<br><br>शिवशर्मसूरि | | | | मध्यम | ,, |
| १६९०३ | प्रवचनसारोद्धार प्रकरण | ३० | प्रा० | नेमिचंद्रसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६९०४ | पाक्षिकसूत्र वृत्ति सह | ६० | प्रा०सं० | वृ०यशोदेवसूरि | २७०० | वृ०११८० | १५१३ | ,, | १०।। X ४। |
| १६९०५ | प्रवचनविचारसार | ५० | सं० | उ०नयकुंजर | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९०६ | योगशास्त्र चार प्रकाश बालावबोध सह | ८६ | सं०गु० | मू०हेमचंद्रसूरि<br>बा० सोमसुंदरसूरि | | | | ,, | १०।। X ४।। |

१. पत्र १८५-१८६, २६१, ४७९ डबल छे २. पत्र ३४-४२ नथी.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनास. | लेखनस. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६९०७ | संग्रहणीप्रकरण सटीक त्रिपाठ | ६२ | प्रा०सं० | मू० श्रीचन्द्रसूरि, टी० देवभद्रगणि | ३५०० | | | मध्यम | १०।। X ४। |
| १६९०८ | श्रावकानुष्ठानविधि वंदारुवृत्ति | ६५ | सं० | देवेन्द्रसूरि | २७२० | | १६२६ | ,, | १०।। X ४।। |
| १६९०९ | कर्मग्रंथटीका अपूर्ण | २१ | ,, | देवेन्द्रसूरि स्वोपज्ञ | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९१० | धर्ममंत्रीश्वर कथा | २ - १ २ | गु० | | | | | ,, | ,, |
| १६९११ | शास्त्रीय विचार | ३ | प्रा०सं० | | | | | ,, | ,, |
| १६९१२ | श्रावकानुष्ठानविधि-वंदारुवृत्ति | ११-५७ | सं० | | २७२० | | १६७१ | मध्यम | ,, |
| १६९१३ | प्रद्युम्नरास अपूर्ण | ३४ | गु० | | | | | उत्तम | ,, |
| १६९१४ | संग्रहणीप्रकरण-सस्तबक | ३२ | प्रा०गु० | मू. हेमचंद्रसूरि मल० | १७५१ | | | मध्यम | १०। X ४।। |
| १६९१५ | मौनएकादशीकथा सस्तबक | १५ | सं० गु० | मू० सौभाग्यनंदिसूरि | मू० ११७ | १५७६ | | उत्तम | १० X ४।। |
| १६९१६ | स्नात्रपंचाशिका बाला० सह | २९ | ,, | बा० शुभशीलगणि | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९१७ | रूपसेनचरित्र गद्य | ३१ | सं० | जिनसूरि | | | | ,, | १० X ४।। |
| १६९१८ | भक्तामरस्तोत्र अपूर्ण | ४ | ,, | | | | | मध्यम | ,, |
| १६९१९ | आषाढाभूति चतुष्पदी अपूर्ण | १३ | गु० | ज्ञानसागर | | | | उत्तम | ,, |
| १६९२० | उत्तराध्ययनसूत्रकथा | ११३ | सं० | पद्मसागरगणि | | १६५७ | | मध्यम | ,, |
| १६९२१ | षष्टिशतक प्रकरण बाला०सह[1] | ४६ | प्रा०गु० | मू० नेमिचंद्र भंडारी, बा० सोमसुंदरसूरि | | बा०१४९६ | १६०७ | उत्तम | ,, |
| १६९२२ | षष्ठ कर्मग्रन्थ सस्तबक | २७ | ,, | स्त० धनविजयवाचक | | स्त.१६०० | १७२१ | ,, | ,, |
| १६९२३ | ब्रह्मचारी | १२ | गु० | समरसिंह | ११५ | | | ,, | ,, |
| १६९२४ | (१) आदिनाथ, शांतिनाथ, नेमिनाथ[2] पार्श्वनाथ, महावीरजिन पंचक चरित्र[3]स्तोत्र पंचक | २१५-२२२ | प्रा० | जिनवल्लभगणि | | | | ,, | ,, |
| | (२) जयतिहुयण स्तोत्र | २३२-२३५ | अप० | अभयदेवाचार्य | ३० कडी | | | | |
| | (३) अजितशांति स्तोत्र | २३५-२३८ | प्रा० | नंदिषेण | ३९गा० | | | | |
| | (४) उल्लासिक्कम० स्तोत्र | २३८-२४० | ,, | जिनवल्लभगणि | १७गा० | | | | |
| | (५) नमिऊण स्तोत्र | २४०-२४१ | ,, | मानतुंगसूरि | २१गा० | | | | |
| | (६) स्मरणा स्तोत्र | २४१-२४३ | ,, | जिनदत्तसूरि | २६गा० | | | | |
| | (७) गुरुपारतंत्र्यस्तोत्र | २४३-२४४ | ,, | जिनदत्तसूरि | २०गा० | | | | |

१. पत्र ३जु डबल २. पत्र २२३-२३१ नथी. ३. पत्र ३१ मुं डबल

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (८) सिग्घमवहरउ स्तोत्र | २४४-२४५ | प्रा० | जिनदत्तसूरि | १४गा० | | | | |
| | (९) एगुणत्रीसी भावना | २४५-२४६ | ,, | | २९गा० | | | | |
| | (१०) शीलोपदेशमाला प्रकरण | २४६-२५२ | ,, | जयकीर्तिसूरि | ११६गा० | | | | |
| | (११) प्रथम, द्वितीय, तृतीय कर्मग्रन्थ | २५२-२६० | ,, | देवेन्द्रसूरि | | | | | |
| १६९२५ | उपदेशमाला प्रकरण सस्तबक | ३८ | प्रा०गु० | मू० धर्मदासगणि | | | १७१० | उत्तम | १० X ४॥ |
| १६९२६ | उपदेशमाला प्रकरण | ४० | प्रा० | मू० धर्मदासगणि | ५४४गा०,१८००,२५०० | | | ,, | ,, |
| १६९२७ | शतकचूर्णी | ७१ | ,, | | २३२२ | | | ,, | ,, |
| १६९२८ | लघुनामनिर्णय तृतीयकांड पर्यन्त | ९८ | सं० | भानुचंद्र | | | | | |
| १६९२९ | ऋषिमण्डलप्रकरण सस्तबक | ४४ | प्रा०गु० | मू० धर्मघोषसूरि | मू० २२४ | | | ,, | ९॥। X ४।। |
| १६९३० | सारस्वतव्याकरण कृदंतवृत्ति अपूर्ण | २-१४ | सं० | | | | | उत्तम | ९॥। X ४॥ |
| १६९३१ | उपमितिभवप्रपंचा कथा | ३७९ | ,, | सिद्धर्षि | १६००० | ९६२ | १७२२ | ,, | १० X ४॥ |
| १६९३२ | कर्मप्रकृति सटीक[१] | २१२ | प्रा०सं० | मू० शिवशर्मसूरि, टी० मलयगिरि | ८००० | | १८११ | ,, | ९॥। X ४॥। |
| १६९३३ | योगशास्त्र आद्य चार प्रकाश बाला० सह | १४३ | सं०गु० | मू०हेमचंद्रसूरि बा० सोमसुंदरसूरि | | | १६७२ | मध्यम | ९॥। X ४। |
| १६९३४ | (१) आचारोपदेश | | सं० | चारित्रसुंदर | | | | उत्तम | १० X ४॥ |
| | (२) योगदृष्टिसमुच्चय | | | हरिभद्रसूरि | | | | | |
| | (३) आत्मानुशासन | २७ | | पार्श्वनाग | १०० | १०४२ | | | |
| | (४) योगसार | | | | | | | | |
| | (५) इष्टोपदेश | | | | १४१ | | | | |
| | (६) योगप्रदीप | | | | | | | | |
| १६९३५ | सीमंधरजिनस्तवन सस्तबक | ६२ | गु० | उ० यशोविजयजी | ३५४गा० | १७६७ | | ,, | १०॥ X ४॥। |
| १६९३६ | दीपालिकाकल्प सस्तबक | ४४ | ,, | मू० जिनसुंदरसूरिस्त० सुखसागर | | स्त.१७६३ मू०१४८३ | १७८६ | ,, | १०॥ X ४॥। |
| १६९३७ | तत्त्वातत्त्वविचार | ९ | ,, | | | | | मध्यम | ,, |
| १६९३८ | भक्तामर स्तोत्र | ४ | सं० | मानतुंगसूरि | ४४का० | | | जीर्ण | १०। X ४॥। |
| १६९३९ | कर्मग्रन्थ त्रण[२] | ६ | प्रा० | देवेन्द्रसूरि | | | | ,, | १०॥ X ४॥। |
| १६९४० | कर्मग्रन्थ चतुर्थ | ४ | ,, | देवेन्द्रसूरि | ८६ गा० | | | ,, | ,, |
| १६९४१ | सीमंधरस्वामी स्तवन १५मी ढाल सस्तबक | ४ | गु० | उ०यशोविजयजी | | | | उत्तम | १०॥ X ४॥। |

१. पत्र ९५ मुं नथी. २. एकखूणेथी उंदरे खाधेली छे.

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६९४२ | जीवविचार प्रकरण सस्तबक | १० | प्रा०गु० | मू० शांतिसूरि | ३७५ गा० | | १७७९ | उत्तम | १०।। X ४।।। |
| १६९४३ | शास्त्रीयविचार विधि आदि संग्रह | ४७ | गु० | | | | | ,, | १०।।। X ४।।। |
| १६९४४ | ज्ञानपंचमी कथा गद्य | ४ | सं० | | | | १८२५ | ,, | १०।। X ४।।। |
| १६९४५ | दशश्रावकचरित्र गद्य | २२ | ,, | | | | | ,, | ,, |
| १६९४६ | (१) तर्कभाषा<br>(२) तर्कभाषा मंगलवाद | २६ | ,, | (१) केशवमिश्र | | | १६६२ | ,, | ,, |
| १६९४७ | लुंपकचर्चा | १४ | गु० | पार्श्वचंद्रसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६९४८ | पट्टावली सटीक त्रिपाठ | १७ | प्रा०सं० | धर्मसागरोपाध्याय | | | | ,, | १०।।। X ४।।। |
| १६९४९ | संबोधसप्ततिका प्रकरण सस्तबक | ८ | प्रा०गु० | मू० रत्नशेखरसूरि | | | | जीर्ण | १०। X ४।। |
| १६९५० | शीलोपदेशमाला प्रकरण सस्तबक | ६ | ,, | मू० जयकीर्तिसूरि | | | | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६९५१ | दर्शनसप्ततिका प्रकरण | २ | प्रा० | | ७० गा० | | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६९५२ | शीलापदेशमाला प्रकरण | ६ | प्रा० | जयकीर्तिसूरि | ११५ गा० | | | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६९५३ | पाक्षिकसूत्र | ,, | ,, | | ३०० गा० | | | ,, | १०। X ४।।। |
| १६९५४ | (१) दीपालिका कल्प | १५ | सं० | जिनरत्नसूरि | ४३५ | | १६८३ | ,, | १०।। X ४।। |
| | (२) ज्ञानपंचमी कथा | | | कनककुशल | १५१ | १६५५ | | | |
| १६९५५ | संग्रहणी प्रकरण | १७ | प्रा० | | | | १६६२ | ,, | १० X ४।।। |
| १६९५६ | (१) वीरस्तुति<br>(२)सकलार्हतादि | ४ | ,, | सकला०हेमचंद्राचार्य | | | | ,, | ,, |
| १६९५७ | दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति | १० | प्रा० | भद्रबाहुस्वामी | ४४५ गा०<br>५५६ग्रं० | | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६९५८ | शीलोपदेशमाला प्रकरण | ७ | ,, | जयकीर्तिसूरि | ११६गा. | | | | ,, |
| १६९५९ | संग्रहणी प्रकरण अवचूरि | ८ | सं० | | | | १४८५ | मध्यम | ,, |
| १६९६० | पुष्पमाला प्रकरण | १७ | प्रा० | मल०हेमचंद्रसूरि | ५०५गा० | | १५७२ | उत्तम | ,, |
| १६९६१ | प्रशमरति वृत्ति सह | ३० | सं० | मू०उमास्वाति वाचक | | | | ,, | ,, |
| १६९६२ | श्रीपालचरित्र | ३३ | प्रा० | रत्नशेखरसूरि | १६७४, १३४१गा० | १४२८ | १४९५ | मध्यम | १०। X ४।। |
| १६९६३ | अष्टप्रकारी पूजा कथा | १८ | ,, | चंद्रप्रभमहत्तर | | | | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६९६४ | (१)भक्तपरिज्ञा(२)आउरपच्चक्खाण | १८ | ,, | | | | | जीर्ण | ,, |

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (३) संस्तारक प्रकीर्णक | | | | | | | | |
| १६९६५ | भक्तामरस्तोत्र सटीक | ३१ | सं॰ | मू॰ मानतुंगसूरि टी॰गुणाकरसूरि | १५७२ | १४२६ | | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६९६६ | नाममालाबीजक | २६ | गु॰ | शुभविजय | १०५० | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९६७ | धम्मिलहिंडी टिप्पणीसह | २५ | प्रा॰ | संघदासगणि वाचक | | | १५९६ | मध्यम | ,, |
| १६९६८ | ओघनिर्युक्ति | १९ | ,, | भद्रबाहुस्वामी | ११६४गा॰ | | | उत्तम | १०।। X ४।। |
| १६९६९ | पुष्पमाला प्रकरण सावचूरि पंचपाठ | २० | प्रा॰सं॰ | मू॰मल॰हेमचंद्रसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६९७० | कुलध्वजकुमारादि गद्यपद्य कथाओ | २२ | सं॰ | | | | | ,, | ,, |
| १६९७१ | शीलोपदेशमाला प्रकरण | ६ | प्रा॰ | जयकीर्तिसूरि | ११६गा॰ | | | ,, | ,, |
| १६९७२ | गौतमकुलक | ४ | ,, | | २०काव्य | | | ,, | १० X ४।। |
| १६९७३ | गौतमपृच्छा सस्तबक | ५ | प्रा॰गु॰ | मू॰अभयदेवसूरि | २०८ | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९७४ | दोससयमूलजालं गाथा शतार्थी | १५ | सं॰ | उदयधर्मगणि | १००१ | १६०५ | | ,, | १०।। X ४।। |
| १६९७५ | जयतिहुयणस्तोत्र सस्तबक | ७ | प्रा॰गु॰ | मू॰अभयदेवसूरि | ३०कडी | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९७६ | लग्नशुद्धि प्रकरण | ४ | प्रा॰ | हरिभद्रसूरि | १३३गा॰ | | | ,, | ,, |
| १६९७७ | ऋषिमंडल प्रकरण सस्तबक | १३ | प्रा॰गु॰ | धर्मघोषसूरि | २२०गा॰ | | | ,, | ,, |
| १६९७८ | शीलोपदेशमाला प्रकरण | १० | प्रा॰ | जयकीर्तिसूरि | ११६गा॰ | | | ,, | ,, |
| १६९७९ | (१) चतुःशरणप्रकी॰साव॰पंच॰<br>(२) द्रव्यावश्यक स्वरूप गाथा साव॰पंच॰ | ५ | प्रा॰सं॰ | | | | | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६९८० | देववंदनादिभाष्यत्रय सावचूरि पंचपाठ | ६ | प्रा॰सं॰ | मू॰देवेन्द्रसूरि अव॰सोमसुंदरसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६९८१ | साधुअतिचार | ४ | गु॰ | | | | १७१९ | ,, | ,, |
| १६९८२ | (१) चतुःशरणप्रकीर्णक अवचूरि<br>(२) आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक अव॰<br>(३) भक्तपरिज्ञा ,,<br>(४) संस्तारक ,, | ९ | सं॰ | गुणरत्नसूरि | | | | ,, | ,, |
| १६९८३ | श्रावकव्रतभंगविचार-भगवतीसूत्रगत | ४ | प्रा॰ | | | | | ,, | ,, |
| १६९८४ | कायस्थितिस्तोत्र सावचूरि पंचपाठ | ३ | प्रा॰सं॰ | | | | | ,, | ,, |
| १६९८५ | एकविंशतिस्थान प्रकरण | ४ | प्रा॰ | सिद्धसेनसूरि | ६५गा॰ | | | ,, | ,, |
| १६९८६ | दशवैकालिकसूत्र चतुर्थाध्ययन पर्यंत | १६ | ,, | शय्यंभवसूरि | | | १६०५ | मध्यम | ,, |

| क्रमांक | पुस्तकनुं नाम | पत्र | भाषा | कर्ता | श्लोकसंख्या | रचनासं. | लेखनसं. | स्थिति | लम्बाई-पहोलाई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६९८७ | आरामनंदनकथा पद्य | १९ | सं० | | ६१४ | | | मध्यम | १०। X ४।। |
| १६९८८ | उपदेशमालाप्रकरण साव०पंच० | १५ | प्रा०सं० | धर्मदासगणि | मू०५४४गा० | | १४६४ | ,, | ,, |
| १६९८९ | (१)शृंगारवैराग्यमुक्तावली-तरंगिणी | २ | सं० | | ४७का० | | | ,, | १०। X ४।। |
| | (२)आत्मनिंदाष्टक | ,, | | | ९का० | | | | ,, |
| १६९९० | उपदेशकंदली प्रकरण | ६ | प्रा० | आसड | १२५गा० | | | उत्तम | ,, |
| १६९९१ | शोभनस्तुति सावचूरि पंचपाठ | ६ | सं० | मू०शोभनमुनि | | | | मध्यम | १०।। X ४।। |
| १६९९२ | महावीर द्वात्रिंशिका सस्तबक | २ | सं०गु० | सिद्धसेनदिवाकर | ३३का० | | १८०६ | उत्तम | १०। X ४।। |
| १६९९३ | महिपालकथा | ३४ | प्रा० | वीरदेवगणि | १८१३गा० | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९९४ | ज्ञानपंचमीकथा | ३ | सं० | कनककुशल | १५२ | १६५५ | | ,, | १०।। X ४।।। |
| १६९९५ | आचारांगसूत्र प्रथम श्रुतस्कंध प्रथमाध्ययन बालावबोध | ४६ | गु० | पार्श्वचंद्र | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १६९९६ | महावीर द्वात्रिंशिका सस्तबक | ४ | सं०गु० | | | | | ,, | १० X ४।।। |
| १६९९७ | शांतसुधारस | १४ | सं० | उ०विनयविजयजी | | १७२३ | | ,, | १०। X ४।।। |
| १६९९८ | जंबूस्वामी भ्रमरगीता स्वाध्याय | २ | गु० | उ०यशोविजयजी | २८गा० | | | ,, | १०।। X ४।।। |
| १६९९९ | ओगुणत्रीसी भावना | २ | ,, | | ३१गा० | १७७५ | | ,, | १०। X ४।। |
| १७००० | गणधर देववंदन विधि | ४ | ,, | ज्ञानविमलसूरि | | | १७६१ | ,, | १०। X ४।।। |
| १७००१ | (१)योगवाशिष्ठादि सार | | | | २२९ | | | | |
| | (२)अष्टावक्र सूत्र | ६ | सं० | | | | | उत्तम | १०। X ४।।। |
| | (३)शांतिशतक | | | | | | | | |
| | (४)नेमिजिनद्वात्रिंशिका | | | | ३२का० | | | | |
| १७००२ | दशविधयतिधर्म स्वाध्याय | ७ | गु० | ज्ञानविमलसूरि | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १७००३ | महानिशीथसूत्रना बोल | २ | ,, | | | | | | १०।। X ४।। |
| १७००४ | उपदेशरत्नकोश बालावबोध सह | ५ | प्रा०गु० | | ११५ | | १७१७ | ,, | १० X ४।। |
| १७००५ | सिद्धदंडिकाप्रकरण सावचूरि | २ | प्रा०सं० | मू०देवेंद्रसूरि | | | | ,, | १०। X ४।। |
| १७००६ | जीवविचारप्रकरण सावचूरि त्रिपाठ | ९ | ,, | मू०शांतिसूरि | मू०५१गा० | | १७६२ | ,, | १०।। X ४।।। |
| १७००७ | वृत्तरत्नाकर | ९ | सं० | केदारभट्ट | | | १५२७ | ,, | ११ X ४।। |
| १७००८ | वैद्यवल्लभ त्रिशती | ९ | ,, | सारंगधर | ३२४ | | १६५६ | ,, | १०। X ४।। |